Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 268 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 17 अप्रैल 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

जिस व्यक्ति का असत्य की ओर झुकाव होता है उसके ऊपर सत्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

The man who has greater propensity to untruth, truth does not impress him at all.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक आज

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में कल गुरुवार 17 अप्रैल 2025 को अपराह्न 12.30 बजे राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित होगी।

एके-47 और दो नक्सलियों के शव बरामद

कोंडागांव (विसं)। छत्तीसगढ़ में सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी मिली है। कोंडागांव-नारायणपुर सीमा पर मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने दो कट्टर नक्सलियों को मार गिराया। इलाके में तलाशी अभियान जारी है। आईजी बस्तर पी सुंदरराज ने बताया कि इस मुठभेड़ में DVCM हलदर और छ्टरू रामे को जवानों ने ढेर किया है। मौके से AK-47 रायफल समेत गोला और बारूद भी बरामद किए हैं। इससे पहले मंगलवार को मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले में 5 लाख रुपये के इनाम नक्सली ने सुरक्षाबलों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले में 34 साल के रूपेश मंडावी उर्फ सुखदेव ने पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है।

ट्रंप प्रशासन पर बरसे बाइडन, कहा- ये लोग सामाजिक सुरक्षा फंड को लूटना चाहते हैं

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन ने डोनाल्ड ट्रंप का नाम लिए बगैर ट्रंप प्रशासन पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने ट्रंप प्रशासन पर सामाजिक सुरक्षा प्रशासन को कमजोर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सामाजिक सुरक्षा प्रशासन को कमजोर इसलिए किया जा रहा है ताकि इसके पैसे को लूटा जा सके। राष्ट्रपति पद से हटने के बाद पहली बार बाइडन ने सार्वजनिक रूप से ट्रंप प्रशासन और उसकी नीतियों पर तीखा हमला बोला।

छत्तीसगढ़ में 4 नए स्मार्ट औद्योगिक पार्क स्थापित होंगे, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने की घोषणा

सीएसआईडीसी के अध्यक्ष राजीव अग्रवाल ने किया कार्यभार ग्रहण, साय ने दी शुभकामनाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट इण्डस्ट्रियल डेव्हलेपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजीव अग्रवाल ने आज तेलीबांधा स्थित उद्योग भवन में अपना कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने उन्हें अपनी बधाई एवं शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने उम्मीद जताई कि उनके नेतृत्व में सीएसआईडीसी प्रदेश में औद्योगिक वातावरण के निर्माण में बेहतर कार्य करेगा। श्री राजीव अग्रवाल अनेक पदों पर किये हैं। उनके अनुभवों से उद्योग जगत को एक नई ऊंचाई मिलेगी। राज्य में नई औद्योगिक नीति से प्रदेश का विकास होगा। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि वर्तमान में 4.50 लाख करोड़ रूपए का निवेश प्रस्ताव प्राप्त हो चुके हैं। राज्य में खनिज, बिजली और पानी की पर्याप्त उपलब्धता से उद्योगों को फलने-फूलने का अवसर मिलेगा।

वाणिज्य एवं उद्योग विभाग के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य में सेक्टर आधारित उद्योगों को एक ही परिसर में सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने के दृष्टिकोण से मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने राजनांदगांव जिला के ग्राम पटेवा में 322 एकड़ में इलेक्ट्रॉनिक मैन्यूफैक्चरिंग क्लस्टर की स्थापना के लिए 350 करोड़ रूपए, राजनांदगांव जिला के ग्राम बिजेतला में 50 एकड़ में स्पेश मैन्यूफैक्चरिंग क्लस्टर की स्थापना के लिए 25 करोड़ रूपए, नवा रायपुर के 20 एकड़ में रेडिमेट गारमेंट पार्क के लिए 30 करोड़ रूपए तथा नवा रायपुर में ही 30 एकड़ में फर्नीचर क्लस्टर की स्थापना के लिए 40 करोड़ रूपए की घोषणा की। इस तरह कुल 445 करोड़ रूपए की लागत से 4 स्मार्ट औद्योगिक पार्क की स्थापना की जाएगी। छत्तीसगढ़ राज्य में उद्योगों के विकास के लिए एक अनुकुल एवं सकारात्मक वातावरण बनेगा।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह ने नवनियुक्त अध्यक्ष को बधाई देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती वर्ष मनाया जा रहा है। राज्य के नई औद्योगिक नीति से उद्योग बेहतर तरीके से विकसित होंगे और राज्य तेजी से विकास करेगा। सीएसआईडीसी के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजीव अग्रवाल ने कहा कि राज्य के औद्योगिक नीति विकसित राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। पिछले दिनों मुख्यमंत्री साय द्वारा नवा रायपुर में सेमीकंडक्टर उत्पादों के निर्माण के लिए भूमिपूजन किया गया है। अध्यक्ष के रूप में श्री राजीव अग्रवाल ने अपने कर्तव्यों को निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की बात कही।

इस मौके पर उप मुख्य मंत्री श्री अरुण साव, उद्योग मंत्री श्री लखन लाल देवांगन, केबिनेट मंत्री श्री केदार कश्यप, श्री राम विचार नेताम, सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल एवं श्री विजय बघेल, विधायक श्री धरम लाल कौशिक, श्री किरण सिंह देव, श्री मोतीलाल साहू, श्री राजेश मूणत, श्री पुरंदर मिश्रा, श्री अनुज शर्मा, महापौर रायपुर श्रीमती मीनल चौबे, जिला पंचायत रायपुर के अध्यक्ष श्री नवीन अग्रवाल सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

स्टेट सिविल सप्लाईज कॉर्पोरेशन लिमिटेड के नवनियुक्त अध्यक्ष

संजय श्रीवास्तव के पदभार ग्रहण एवं अभिनंदन समारोह में शामिल हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री साय ने कहा- छत्तीसगढ़ की पीडीएस व्यवस्था पूरे देश में सर्वश्रेष्ठ

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज राजधानी रायपुर के शंकर नगर स्थित बीटीआई ग्राउंड में छत्तीसगढ़ स्टेट सिविल सप्लाईज कॉर्पोरेशन लिमिटेड के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव के पदभार ग्रहण एवं अभिनंदन समारोह में शामिल हुए। मुख्यमंत्री श्री साय ने छत्तीसगढ़ स्टेट सिविल सप्लाईज कॉर्पोरेशन लिमिटेड के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव को पदभार ग्रहण करने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने अपने संबोधन में कहा कि श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी ने छत्तीसगढ़ पृथक राज्य का निर्माण किया। 2003 में जनादेश के बाद डॉ रमन सिंह छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री बनाए गए जिनके नेतृत्व में प्रदेश का तेजी से विकास हुआ। मुझे गर्व होता है यह बताते हुए कि डॉ सिंह के नेतृत्व में प्रदेश में जो पीडीएस व्यवस्था बनाई गई। वह आज पूरे देश में सर्वश्रेष्ठ पीडीएस व्यवस्था है। उन्होंने नवनियुक्त अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव की प्रशंसा करते हुए कहा कि बेहद अनुभवी हैं रायपुर नगर निगम में सभापति और रायपुर विकास निगम के अध्यक्ष का दायित्व भी उन्होंने निभाया है। विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह ने कहा कि यह कॉर्पोरेशन सिर्फ एक संस्था नहीं है, बल्कि सरकार और जनता के बीच विश्वास का सेतु है। यह एकमात्र निगम है जो प्रदेश की 75 प्रतिशत जनता से जुड़ा हुआ है। राशन की एक-एक दुकान की मॉनिटरिंग, वेयर हाउस की निगरानी, समय पर जन-जन तक खाद्यान्न सप्लाई सुनिश्चित करने तक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

कार्यक्रम को उपमुख्यमंत्री श्री अरुण साव, खाद्य मंत्री श्री दयालदास बघेल नवनियुक्त अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा, कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम, वन मंत्री श्री केदार कश्यप, खाद्य मंत्री श्री दयालदास बघेल, श्रम एवं उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन, स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, विधायक सर्व श्री किरण सिंह देव, श्री धरमलाल कौशिक, श्री पुन्नूलाल मोहले, श्री प्रबोध मिंज, श्री अमर अग्रवाल, श्री अनुज शर्मा, श्री सुशांत शुक्ला, श्री राजेश अग्रवाल, श्री पुरंदर मिश्रा, रायपुर महापौर श्रीमती मीनल चौबे, राज्य अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री भूपेंद्र सवन्नी, भवन एवं अन्य सन्ननिर्माण कर्मकार मंडल के अध्यक्ष श्री रामप्रताप सिंह, पाठ्यपुस्तक निगम के अध्यक्ष श्री राजा पांडेय, राज्य केश शिल्पी कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष सुश्री मोना सेन, राज्य समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती शालिनी राजपूत, बीज एवं कृषि विकास निगम लिमिटेड के अध्यक्ष श्री चंद्रहास चंद्रकार, छत्तीसगढ़ वक्फ़ बोर्ड के अध्यक्ष श्री सलीम राज, छत्तीसगढ़ चर्म शिल्पकार बोर्ड के अध्यक्ष श्री ध्रुव कुमार मिर्घा, छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष श्री अमरजीत सिंह छाबड़ा, छत्तीसगढ़ राज्य खाद्य आयोग के अध्यक्ष श्री संदीप शर्मा, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल के अध्यक्ष श्री अनुराग सिंह देव मौजूद रहे।

सोनिया-राहुल गांधी और सैम पित्रोदा के खिलाफ चार्जशीट दाखिल, कांग्रेस कार्यकर्ताओं का ईडी दफ्तर के बाहर प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और ओवरसीज कांग्रेस प्रमुख सैम पित्रोदा के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। इस कार्रवाई के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया है।

कांग्रेस का आरोप है कि केंद्र सरकार राजनीतिक विरोधियों को दबाने के लिए जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। पार्टी ने इसके विरोध में देशभर में आंदोलन का ऐलान किया है। राज्य मुख्यालयों में ईडी कार्यालयों के बाहर और जिलों में केंद्र सरकार के दफ्तरों के सामने विरोध प्रदर्शन किए जा रहे हैं। कांग्रेस नेताओं का कहना है कि यह कार्रवाई लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला है, जिसका पुरजोर विरोध किया जाएगा। पार्टी ने इसे 'राजनीतिक प्रतिशोध' की संज्ञा दी है।

जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई होंगे अगले सीजेआई

नई दिल्ली (आरएनएस)। वर्तमान मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) संजीव खन्ना ने बुधवार को केंद्रीय कानून मंत्रालय को न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई को अगला सीजेआई नियुक्त करने की सिफारिश भेजी है।

भारत की सबसे लंबी ट्रांसपोर्ट सुरंग ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना की टनल संख्या 8 का ब्रेकथ्रू समारोह

साक्षी बनने का गौरव प्राप्त हुआ रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, मुख्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद अनिल बलूनी जी को

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। आज भारत की सबसे लंबी ट्रांसपोर्ट सुरंग, ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना की टनल संख्या 8 के ब्रेकथ्रू समारोह का साक्षी बनने का गौरव भारत सरकार के माननीय रेल, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद श्री अनिल बलूनी जी को प्राप्त हुआ। टनल संख्या 8, जिसकी लंबाई 14.58 किलोमीटर है, ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना की सबसे लंबी सुरंग है और यह भारत की सबसे लंबी ट्रांसपोर्ट सुरंग बनने जा रही है।

वर्तमान में- सबसे लंबी रेल सुरंग- खारी और सुंबर स्टेशनों के बीच 12.75 किमी (कटरा-बनिहाल खंड, उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक)। सबसे लंबी सड़क सुरंग: अटल टनल, 9.02 किमी (मनाली-लेह राजमार्ग)

परियोजना की मुख्य विशेषताएं- कुल लंबाई: 125.20 किमी। कुल 12 स्टेशन, 19 मेजर ब्रिज, 38 माइनर ब्रिज। 83 प्रतिशत सुरंग (104 किमी), 14.72 प्रतिशत ओपन कटिंग एंबैंकमेंट्स (18.4 किमी), 2.21 प्रतिशत महत्वपूर्ण पुल (3.07 किमी)। कुल 16 मुख्य सुरंगें (104 किमी), 12 एस्केप टनल (97.72 किमी) और 7.05 किमी क्रॉस पैसेज। कुल सुरंग लंबाई- 213.57 किमी। सबसे लंबी सुरंग- टनल संख्या 8 (14.58 किमी)। सबसे लंबा पुल- देवप्रयाग ब्रिज नं. 06 (स्पैन 125 मीटर)। सबसे ऊंचा पुल- गौचर ब्रिज नं. 15 (ऊंचाई 46.9 मीटर)। सबसे लंबा ब्रिज- श्रीनगर ब्रिज नं. 09 (लंबाई 0.5 किमी)।

टनलिंग कार्य- किमी 6.00 के बाद सारा ट्रैक सुरंग में है। कुल 16 सुरंगों को 10 पैकेज में विभाजित किया गया। सभी पैकेजों की डिजाइनिंग DD&PMC कॉन्ट्रैक्ट्स द्वारा पूर्ण की गई। सभी सुरंगों में टनलिंग कार्य एक साथ प्रारंभ किया गया। अब तक कुल 195 किमी टनलिंग (मुख्य सुरंग, एस्केप टनल, एडिट्स और क्रॉस पैसेज) पूरी की जा चुकी है। 8 एडिट्स विभिन्न सुरंगों में बनाए गए ताकि लंबे सुरंगों को जल्दी पूरा किया जा सके। वर्ष 2014 तक भारतीय रेल के पास कुल सुरंग लंबाई 125 किमी थी। 2014 के बाद से अब तक कुल 468.08 किमी सुरंग कार्य पूरा किया गया है, जो कि 3.7 गुना वृद्धि है।

टनल संख्या 8 में TBM का कार्य- यह हिमालयी भूगर्भीय क्षेत्र में ड्रिल्लरू (टनल बोरिंग मशीन) के सफल प्रयोग का पहला उदाहरण है। TBM का सिंगल शील्ड 9.11 मीटर व्यास वाला है, जिससे 10.4 किमी खुदाई की गई। NATM पद्धति से 4.11 किमी सुरंग बनाई गई। पोर्टल-1 से प्रारंभिक 600 मीटर NATM द्वारा खुदाई कर TBM लॉन्च किया गया। पोर्टल-2 (जानसू छोर) से NATM निरंतर चला।

भूगर्भीय परिस्थितियाँ- भूगर्भीय संरचना- टनल चांदपुर फॉर्मेशन (जौनसार ग्रुप) से होकर गुजरती है। चांदपुर फिल्लाइट (Quarzitic और Schistose फिल्लाइट, Quartzite के इंटरकलेशन सहित) प्रमुख चट्टानें हैं। Quartz वेन्स की उपस्थिति भी पाई गई है। चट्टान की प्रकृति- संरचना: बहुत घनी से अत्यधिक घनी संयुक्त व पर्पटीदार चट्टानें। दृढ़ता: थोड़ी से मध्यम अपक्षयित, मध्यम कमजोर से मध्यम मजबूत चट्टानें। विविधता: टनल संरेखण में उच्च विविधता। जांच की कठिनाइयाँ- कठिन पहुंच और सीमित डेटा। प्रारंभिक बोरहोल्स- 7 (1196 मीटर), अतिरिक्त बोरहोल्स: 2 (1077 मीटर) ओवरबर्डन (ऊपरी चट्टान की मोटाई)- अधिकतम 800 मीटर (लगभग 1 किमी), न्यूनतम 70 मीटर। टनल व्यवहार- उच्च स्तर का स्क्वीजिंग व्यवहार, विशेषकर अधिक ओवरबर्डन और कमजोर चट्टानों के कारण।

TBM टनल निर्माण की प्रमुख चुनौतियाँ- भूगर्भीय जटिलताएँ: विभिन्न गुणवत्ता की चट्टानें (कमजोर, मध्यम, कठोर), 20 प्रतिशत मार्ग में स्क्वीजिंग स्थिति। गहरी भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र और विकृतियाँ। TBM संचालन: बिना रुके कार्य करना, सतत भूगर्भीय परीक्षण जारी रखना। स्क्वीजिंग ज़ोन में फँसने का खतरा। प्रणाली की उच्च विश्वसनीयता की आवश्यकता। जल रिसाव- दो प्रमुख क्षेत्रों में अधिकतम 2000 लीटर प्रति मिनट का जल प्रवाह। उपकरण, सुरक्षा और प्रगति पर प्रभाव। अन्य चुनौतियाँ- सामग्री और सेगमेंट्स की निर्बाध आपूर्ति, मानसून और यात्रा सीजन की दिक्कतें। 11 किमी लंबा ग्राउट पाइपलाइन सिस्टम, विभिन्न मिक्स डिज़ाइनों की आवश्यकता। समानांतर निर्माण गतिविधियाँ जैसे क्रॉस पैसेज, टनल खुदाई, TBM संचालन।

रेल पुल निर्माण की स्थिति- कुल 19 मेजर ब्रिज, 5 महत्वपूर्ण, 38 माइनर ब्रिज। 3 महत्वपूर्ण पुल: 1 गंगा जी पर, 1 चंद्रभागा जी पर, 3 अलकनंदा जी पर 08 मेजर ब्रिज पूर्ण, 3 महत्वपूर्ण पुल (1 चंद्रभागा जी पर, 2 अलकनंदा जी पर) पूर्ण। ऋषिकेश में 1 ROB और 1 RUB पूर्ण। गौचर, श्रीनगर और सिवाई में 3 प्रमुख रोड ब्रिज कार्य पूर्ण। शेष 11 ब्रिजों का कार्य उन्नत चरण में है।

परियोजना की प्रगति व लक्ष्य- विरभद्र-योगनगरी ऋषिकेश खंड 20.03.2020 को चालू किया गया। टनलिंग कार्य 2026-27 के अंत तक पूरा करने का लक्ष्य। ट्रैक, विद्युत, ओएचई और सिग्नल व दूरसंचार कार्य शीघ्र प्रारंभ होंगे।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, गुरुवार 17 अप्रैल 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

इको क्लब के बच्चों ने बरगद को किया संरक्षित, प्राचार्य साहू ने इको क्लब गतिविधियों को सराहा

आरंग (विश्व परिवार)। मंगलवार को शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चरौदा में इको क्लब के बच्चों व शिक्षकों ने मिलकर शाला परिसर में लगे विशाल बरगद के तने पर मिट्टी डालकर संरक्षित किया। वही नोडल प्राचार्य सीएल साहू उपस्थित होकर स्कूल में चल रहे इको क्लब की गतिविधियों की सराहना करते हुए बच्चों को प्रोत्साहित किया वहीं शाला के शिक्षकों ने बताया यहां के बच्चे स्वप्रेरित होकर स्कूल परिसर में लगे पेड़ पौधों की सिंचाई व संरक्षण करते हैं।

सेना अग्निवीर भर्ती के लिए 25 अप्रैल 2025 तक ऑनलाइन आवेदन

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। भारतीय सेना अग्निवीर की भर्ती जनरल ड्यूटी, टेक्निकल, क्लर्क/स्टोर कीपर एवं अग्निवीर ट्रेड्समेन के लिए 10वीं पास तथा अग्निवीर ट्रेड्समेन 8वीं, 10वीं पास, महिला सैन्य पुलिस और रेगुलर कैडर भर्ती धर्म गुरु, नर्सिंग सहयोगी और सिपाही फार्मा के पदो के लिए अधिसूचना जारी की गई है। भारतीय सेना (अग्निवीर) भर्ती के लिए इच्छुक अभ्यर्थी 25 अप्रैल 2025 तक भारतीय सेना की वेबसाइट www.joinindianarmy.nic.in पर अपना पंजीकरण करा सकते हैं इस बार से अभ्यर्थी अग्निवीर के दो पदों के लिए अपनी योग्यता अनुसार आवेदन कर सकते है। अग्निवीर क्लर्क के अभ्यर्थीयों को ऑनलाइन परीक्षा सीईई के समय टाइपिंग टेस्ट भी देना होगा ऑनलाइन परीक्षा सीईई जून 2025 में होने की संभावना है। किसी भी अन्य जानकारी और समस्या के लिए सेना भर्ती कार्यालय रायपुर दूरभाष नंबर 0771-2965212, 0771-296524 पर संपर्क कर सकते है।

सुशासन तिहार: कबीर नगर, कोटा, सरोना, महादेवघाट में विशेष सफाई अभियान चलाकर सफाई सम्बन्धी 18 जनशिकायतों का त्वरित समाधान

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के आदेशानुसार और उप मुख्यमंत्री नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग श्री अरुण साव के निर्देशानुसार सुशासन तिहार 2025 के प्रथम चरण में आमजनों से प्राप्त जनशिकायत का त्वरित समाधान दूसरे चरण में करवाने रायपुर नगर पालिक निगम की महापौर श्रीमती मीनल चौबे, सभापति श्री सूर्यकान्त राठौड़, आयुक्त श्री विश्वदीप, नगर निगम जोन 8 के जोन अध्यक्ष श्री प्रीतम सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में जोन कमिश्नर श्री जसदेव सिंह बाबरा और कार्यपालन अभियंता श्री अभिषेक गुप्ता के निर्देशन में नगर निगम जोन क्रमांक 8 की सफाई टीम भेजकर जोन के तहत कबीर नगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, कोटा, सरोना, महादेवघाट रायपुरा के क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न 18 स्थानों पर खारून नदी के तट पर किनारे जलकुम्भी हटाने के अभियान सहित जाम चेम्बरों को सफाई करवाकर खुलवाने, नालियों की सफाई, सफाई पश्चात बाहर रखे गए कचरे को एकत्र कर उठाव करवाने विशेष सफाई अभियान चलाकर सुशासन तिहार 2025 के अंतर्गत सफाई से सम्बंधित आमजनों द्वारा दर्ज करवाई गयी विभिन्न 18 जनशिकायतों का त्वरित समाधान किया गया. जिससे उक्त स्थानों पर सफाई के तत्काल पश्चात स्वच्छ वातावरण कायम हुआ और नागरिकों को गन्दगी दूर होने पर त्वरित राहत मिली.

सीजीपीएजी की कला प्रदर्शनी में दिल्ली से आये कला समीक्षक राम प्रवेश पाल ने कला बाजार की जानकारियां दी

पेंटिंग प्रदर्शनी में हुई परिचर्चा, अनुभवी व्यक्तित्वों ने कलाकारों को सिखाई बारीकियां, महंत घासीदास म्यूजियम में प्रदेश के 47 कलाकारों की प्रदर्शनी सोहई का हुआ समापन

छत्तीसगढ़ पेंटिंग की दृष्टि से संभावनाओं का गढ़ साबित हो रहा, विज़ुअल आर्ट एग्जीबिशन में समीक्षकों के उद्गार

रायपुर (विश्व परिवार)। दिल्ली से रायपुर आए कला समीक्षक व राष्ट्रीय स्तर के कलाकार राम प्रवेश पाल ने कहा कि, छत्तीसगढ़ में संभावनाओं का दीप यहां के कलाकारों ने प्रज्वलित किया है। उन्होंने यहां की समृद्ध लोक परंपरा की चर्चा की। राम प्रवेश कला व्यवसाय के अनेक बिंदुओं पर भी सारगर्भित चर्चा की। विमर्श सत्र में वरिष्ठ पत्रकार व कला समीक्षक वसन्त वीर उपाध्याय, डॉ सुनीता वर्मा, डॉ. अंकुश देवांगन तथा हुकुम लाल वर्मा ने अपने उदगार व्यक्त किए। वसन्त वीर उपाध्याय ने रायगढ़ की उन गुफाओं का जिक्र किया जहां आदि मानव ने दीवारों पर चित्र उकेरे हैं। उन्होंने कहा कला के संस्कार छत्तीसगढ़ में आदि युग से है।

उल्लेखनीय है इंदिरा कला विश्व विद्यालय के कलागुरु प्रो. मिश्रा की स्मृति में आयोजित कला प्रदर्शनी 12 से 14 जनवरी तक आयोजित है।

CGPAG के संस्थापक जितेन साहू बताते है कि छत्तीसगढ़ प्रगतिशील कलाकार समूह (सीजीपीएजी) की यह पहली समकालीन कला प्रदर्शनी है। राज्य सरकार नियमित रूप से लोक कला और परंपराओं पर केंद्रित कार्यक्रम आयोजित करती है, उन्हें मंच प्रदान करती है, लेकिन छत्तीसगढ़ के गठन के दो दशक से अधिक समय बाद भी, समकालीन कलाकारों को मंच प्रदान करने वाली कोई संस्था या अकादमी नहीं है। सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ, कलाकारों का एक समूह स्वेच्छा से सीजीपीएजी का गठन करने के लिए एक साथ आया है, जो एक गैर-वाणिज्यिक, रचनात्मक और सृजनात्मक दृष्टिकोण के साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

वे दिन जब महाकोशल कला परिषद और इसके संस्थापक श्री कल्याण प्रसाद शर्मा छत्तीसगढ़ में कलाओं को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहे थे, अब अतीत की बात लगती है। जहाँ तक मुझे याद है, ललित कला अकादमी गैलरी में एक बार बिहनिया नामक एक प्रदर्शनी आयोजित की गई थी, जिसका उद्घाटन एस.एच. रजा ने किया था। तब से, छत्तीसगढ़ में समकालीन कला के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय सन्नाटा छा गया है।

छत्तीसगढ़ के कुछ कलाकार निश्चित रूप से कला के क्षेत्र में खुद को स्थापित कर पाए हैं। हालांकि, राज्य में लोक कला के क्षेत्र में गतिविधियां बहुत कम हैं।

सीजीपीएजी महज एक समूह नहीं है, यह एक विचार है। यह सामूहिक भावना और भागीदारी का प्रतिनिधित्व करता है। निस्संदेह, आने वाले समय में सीजीपीएजी छत्तीसगढ़ के समकालीन कला आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आयोजन के संयोजक डॉ. ध्रुव तिवारी ने वक्ताओं सहित कलाकारों का सम्मान किया। इस अवसर पर स्पेशल सोहइ केक काट कर डॉ. सुनीता वर्मा ने आयोजन के चर्चा सत्र की शुरुवात की। बड़ोदरा से आई डॉ. तरुणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। आरती मुले की वंदना व सरिता श्रीवास्तव के भाव नृत्य ने सबको प्रभावित किया। राजधानी में लगी प्रदर्शनी का 14 अप्रैल सोमवार को समापन हुआ।

आज होगा बड़ा संधारण कार्य, शटडाउन के कारण शाम की पाली में नहीं खुलेंगे नल

महापौर व आयुक्त ने बैठक लेकर दिए सख्त निर्देश

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत आगामी दिनों पड़ने वाली भीषण गर्मी में विद्युत संबंधी तकनीकी खामी के चलते पानी सप्लाई बाधित होने से रोकने तथा शिवनाथ नदी इंटकवेल व फिल्टर प्लांट में किसी भी प्रकार के विद्युत व मशीनरी कार्य में दिक्कत न हो इसे ध्यान में रखते हुए नगर निगम के जलगृह विभाग ने कल 17 अप्रेल गुरुवार को एक साथ अलग अलग स्तर पर व्यापक तौर पर संधारण कार्य करने जा रही है जिसके चलते कल गुरुवार को शहर के 42 एम एल डी प्लांट के किसी भी टंकी से शाम की पाली की पानी सप्लाई नहीं होगा।

इस अत्यावश्यक कार्य की पूर्व तैयारी को लेकर आज सुबह महापौर श्रीमती अलका अलका बाघमार ने आयुक्त सुमित अग्रवाल की उपस्थिति में जल गृह प्रभारी श्रीमती लीना दिनेश की जलघर स्थित चेंबर में आपात बैठक लेकर विभागीय अधिकारियों को पूरी तैयारी के साथ संधारण कार्य पूरी करने व शट डाउन के दौरान आवश्यकतानुसार प्रभावित क्षेत्र में टैंकर की वैकल्पिक व्यस्था करने के निर्देश दिए है। साथ ही शहर के विभिन्न क्षेत्रों से आ रही लो प्रेशर बोरिंग नल मरम्मत जैसे कार्यों के लेट लतीफी के लिए अधिकारियों सख्त निर्देश देते हुए प्राथमिकता से रिपेयर कार्य पूरे करने कहा है बैठक में जल घर प्रभारी लीना दिनेश देवांगन के अलावा, लोक कर्म प्रभारी देवनारायण चंद्राकर, विद्युत विभाग प्रभारी ज्ञानेश्वर ताम्रकार, कार्यपालन अभियंता दिनेश नेताम, सहायक अभियंता गिरीश दीवान, जलकार्य निरीक्षक नारायण ठाकुर सहित निगम के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। गुरुवार को निगम के जल गृह विभाग द्वारा जिन बड़े संधारण व अन्य कार्य किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना की आबंटित दुकानदारों को बकाया राशि एवं समेकित कर का नोटिस जारी

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के अंतर्गत बेरोजगार लोगो को रोजगार प्रदान करने के लिए गुमटी प्रदान की गई थी। जिसमें उन्हे प्रतिमाह किराया जमा करना था, परन्तु उनके द्वारा दुकान किराया एवं समेकित कर जमा नहीं किया जा रहा है। उनसे दुकान किराया एवं समेकित कर जमा करने के लिए नगर निगम भिलाई द्वारा नोटिस भी जारी किया गया है। जो दुकानदार नहीं मिल रहे है, उनके दुकान के सामने नोटिस चस्पा किया जा रहा है। मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजना के तहत हितग्राहियो को जो भी दुकान आबंटित किया गया है, उसकी माह अनुसार बकाया राशि जमा करना अनिवार्य है।

PUBLIC NOTICE

NOTICE U/S 72 OF THE INDIAN PARTNERSHIP ACT 1932

Notice is hereby given that in the partnership firm **"Mahagauri resources"**, Mr. Mihir Rajesh Agrawal is admitted as a new partner and Mr Rajesh Agrawal has retired from the partnership firm w.e.f 01.04.2025.

For, Mahagauri Resources

छत्तीसगढ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड, रायपुर

// बिजली बंद की सूचना //

समस्त सम्मानीय उच्चदाब एवं निम्नदाब उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि तिल्दा उपसंभाग के अंतर्गत आने वाले 33/11 के.व्ही. विद्युत लाईन में मानसून पूर्व आवश्यक सुधार कार्य एवं मरम्मत कार्य हेतु लाईन बंद होने निचे तालिका में दर्शित दिनॉक को **सुबह 10.00 से शाम 04.00 बजे** तक विद्युत प्रवाह बंद रहेगा, जिसके कारण फिडर से निकलने वाले समस्त दर्शित क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति अवरूद्ध रहेगी। आवश्यकतानुसार समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

क्र.	दिनांक	132 के.व्ही. उपकेन्द का नाम	33 के.व्ही. फीडर का नाम	प्रभावित क्षेत्र
1	17/04/25	132 के.व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. बरतोरी फिडर	33/11 के. व्ही. उप केन्द्र बरतोरी से निकलने वाले 11 के.व्ही. फीडर के उपभोक्ता तथा 33 के. व्ही.एच.टी. फीडर खेतान बिल्डकान रायपुर कैटेनर तथा आर. के., वेयर हाउस के उपभोक्ता इत्यादि।
2	19/04/25	132 के.व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. तुलसी फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र तिल्दा एवं तुलसी से निकलने वाले समस्त।। के.व्ही. फीडरों के उपभोक्ता।
3	21/04/25	132 के. व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. ताराशिव	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र से निकलने वाले 11 के.व्ही. फीडर के समस्त उपभोक्ता तथा 33 के. व्ही के उपभोक्ता
4	23/04/25	132 के.व्ही. सिमगा	33 के.व्ही. जी.एम.आर.	33/11 के. व्ही. उपकेन्द्र ताराशिव से निकलने वाले समस्त 11 के. व्ही. फीडर के उपभोक्ता, तथा 33 के.व्ही. इकोरेक्स, महालक्ष्मी स्टोन, अमेटी यूनिवर्सिटी, आई.टी. बी.पी., उमाश्री बी.पी.सी.एल. अष्ट धातु फेरो इत्यादि।
5	25/04/25	132 के.व्ही. कुथरेल	33 के.व्ही. हाईटेक फीडर	33 के.व्ही. हाईटेक फीडर
6	26/04/25	132 के.व्ही. सिमगा	33 के.व्ही. रायपुर फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र बिलाडी से निकलने वाले समस्त 11 के.व्ही. फीडरों के उपभोक्ता तथा 33 के.व्ही. एच.टी. महेन्द्रा, वेन्कट पोल्ट्री, रायपुर रेफा थेम, सेन्ट्रल सीमेंट इत्यादि ।।
7	28/04/25	132 के.व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. जोता से बिलाडी फीडर	33/11 के.व्ही. जोता एवं बिलाडी से निकलने वाले समस्त ।। के. व्ही. फीडर के उपभोक्ता तथा 33 के.व्ही. एच.टी. महेन्द्रा, वेन्कट पोल्ट्री, रायपुर रेफा येम, सेन्ट्रल सीमेंट इत्यादि ।
8	30/04/25	132 के.व्ही. कुथरेल	33 के.व्ही. के.जे. फीडर	33 के.व्ही. वकरंगी फीडर एवं 33 के.व्ही. हाईटेक फीडर
9	02/05/25	132 के.व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. पोल्ट्री फीडर	33 के.व्ही. पोल्ट्री फीडरों के समस्त उपभोक्ता। एच.टी. महेन्द्रा, वेन्कट पोल्ट्री, रायपुर रेफ्रा थेम, सेन्ट्रल सीमेंट इत्यादि।
10	05/05/25	132 के.व्ही.तुलसी	33 के.व्ही. टोहडा फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र दोहडा, हिरमी से निकलने वाले समस्त 11 के. व्ही. फीडरों के उपभोक्ता एवं 33 के.व्ही. एच.टी. विद्या राइस मिल, मनीष फूड्स, नटराज, पेशिव इन्फा इत्यादि।
11	07/05/25	132 के.व्ही. कुथरेल	33 के.व्ही. वकरंगी फीडर	33 के.व्ही. वकरंगी फीडर
12	09/05/25	132 के.व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. वकरंगी फीडर	33 के.व्ही. वकरंगी फीडर/
13	12/05/25	132 के.व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. जोता फिडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र बिलाडी से निकलने चाले समस्त 11 के.व्ही. फीडर के उपभोक्ता, तथा 33 के.व्ही. पोल्ट्री फीडर एवं अग्रवाल विद्युत फीडर
14	14/05/25	132 के.व्ही. कुथरेल	33 के. व्ही. हाईटेक फीडर	33 के.व्ही. हाईटेक फीडर
15	16/05/25	132 के.व्ही. कुथरेल	33 के.व्ही. सिलयारी फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र सिलयारी से निकलने वाले समस्त 33 के.व्ही. एवं 11 के.व्ही. फीडरों के उपभोक्ता
16	19/05/25	132 के.व्ही. तुलसी	33 के.व्ही. बी. पी.सी.एल. फीडर	33 के.व्ही. बी. पी. सी. एल. फीडर के समस्त उपभोक्ता
17	21/05/25	132 के.व्ही. कुथरेल	33 के.व्ही. इंडियन आयल फीडर	33 के.व्ही. इंडियन आयल फीडर के समस्त उपभोक्ता

Credible Chhattisgarh
विश्वसनीय छत्तीसगढ
विद्युत संबंधित शिकायतें केन्द्रीकृत कॉल सेन्टर के फोन नं0 1912 पर दर्ज कराएँ।

असुविधा के लिए खेद है

(धनंजय कुमार वर्मा)
कर्मचारी संख्या-92315604 कार्यपालन यंत्री (संचा0/संधा0) संभाग छ0स्टे0पॉ0 डि0कं0लि0, रायपुर

विद्युत चोरी एक दण्डनीय अपराध हैं कृपया इससे बचे
स्वहित एवं राष्ट्र हित में उर्जा बचाइएव

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19866/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 16-04-202

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19866
वार्ड का नाम- 28 - शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR223M00089** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **NIRMALA JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O MR. TARACHAND JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. राजेश कुमार जैन 2. युवराज कुमार जैन** पिता / पति **दोनो के पिता स्व. ताराचंद जैन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19864 /न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 16-04-202

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19864
वार्ड का नाम- 13 - राजीव गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 13 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR222H00094** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR. ASHOK KUMAR ASRANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O KUNDANLAL ASRANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MADHAV AGRO CHEM PVT LTD. DUWRA DIRECTOR - SHIVAM SUHANE** पिता / पति **S/ O VINOD KUMAR GUPTA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19865/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 16-04-202

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19865
वार्ड का नाम- 14 - रमन मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 14 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR221B0421B** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **LAXMAN GENDLAL SANTOSH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O BARATILAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती गायत्री साहू पति - श्री सोहन लाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

न्यायालय तहसीलदार रायपुर
मामले की श्रेणीः राजस्व
संदर्भः जिला रायपुर तहसील-रायपुर प.ह.न.-00044 सड्डू ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक - RD 202425440723900134

इशितहार

तहसील रायपुर के प.ह.न. 00044 के अंतर्गत ग्राम सड्डू के वर्तमान भूमिस्वामी **प्रमोद कुमार जैन पिता/पति-स्व सम्पतलाल जैन पता-जैनम विहार कालोनी पचपेड़ी नाका रायपुर छग** के द्वारा धारित भूमि **खसरा क्रमांक 99/33 (0.0084)** में प्रस्तावित भूमिस्वामी/**क्रेता परवेज खान पिता/पति-सुभान खान पता-निवासी वार्ड नं. 09, ओर्बिट कम्प्यूटर गली के पास, विधानसभा रोड, मोवा रायपुर छ0ग.** के नाम पर पंजीयन/फ़ौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती / खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई **दिनांक 30/04/2025** को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय न्यायालय तहसीलदार रायपुर पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आंगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता / आममुख्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 16/04/2025 को जारी किया जाता है।

मुहर

तहसीलदार :
Pawan kosma
तहसील रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि **दीनदयाल आवास योजना, सेजबहार/दतरेंगा, रायपुर** में स्थित भवन क्र. **एल.आई.जी.-247, श्री संजय बोहरा पिता श्री लक्ष्मीनारायण जैन,** के नाम पर इस कार्यालय का आबंटन आदेश **क्रमांक 708 दिनांक 29.01.2010** द्वारा एकमुश्त आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में **दिनांक 26.04.2011** को सेलडीड पंजीकृत उपरांत **दिनांक 11.11.2014** को हस्तांतरण विलेख (फ्री-होल्ड) निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को **क्रेता श्री रामनरेश पिता श्री रामदास, निवासी-बी-17, सेक्टर-02, कमल विहार, तह. व जिला-रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में **दिनांक 27.03.2015** को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में **क्रेता श्री रामनरेश पिता श्री रामदास** द्वारा उक्त भवन को फ्री-होल्ड पश्चात् अपने नाम पर नाम दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के नाम दर्ज करने के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा **कबीर नगर रायपुर** में निर्मित दीनदयाल आवास योजना के अंतर्गत, भवनों में से फ्लैट / भवन **क्रमांक एल.आई.जी.-51/603,** भू-तल में **श्रीमती ऐश्वर्या कुमारी पति श्री अभिषेक आनंद** को स्ववित्तीय / एकमुश्त आधार पर आबंटित / नामांतरित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 17.02.2020** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी द्वारा उक्त फ्लैट / भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 21.02.2025** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर उक्त फ्लैट / भवन **श्रीमती कामनी सिंह पति श्री सुमन सिंह** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अतः किसी भी व्यक्ति शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जावेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19679/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 12-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19679
वार्ड का नाम- 27 - इंदिरा गांधी

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR220F00007** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KRISHAN KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM GHULAM SHUKLA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1 सुरेश चन्नावार पिता स्व दामोदर राव चन्नावार 2 आशीष तिवारी पिता के के तिवारी 3 शैलेश तिवारी पिता के के तिवारी** पिता / पति **श्री/श्रीमती 1 सुरेश चन्नावार** पिता **स्व दामोदर राव चन्नावार 2 आशीष तिवारी पिता के के तिवारी 3 शैलेश तिवारी पिता के के तिवारी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19331/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 16-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19331
वार्ड का नाम-34- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 34 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR332F00174** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DILRAJ UDAY** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O KULRAJ SINGH UDAY** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. TOSHI KAUR UDAY** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O RAJENDRA SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19693/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 16-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19693
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331A00302** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RANVIR SINGH SHASTRI** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O VALESHWAR SINGH SHASTRI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती सुधा सिंह** पिता/पति **पति - श्री राहुल सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./19694/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 16-04-2025

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 19694
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR332A00142** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. JANKI BAI BHOJWANI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O MITARO MAL BHOJWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री अशोक कुमार भोजवानी** पिता/पति **पिता - श्री मितेरोमल भोजवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 17 अप्रैल 2025

अग्रवाल सभा रायपुर द्वारा सूरजपुर के पांच नेताओं को किया गया सम्मानित

दल कोई भी हो समाज के लोग हैं तो उन्हें हर हाल में करो समर्थन - बृजमोहन अग्रवाल

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-प्रदेश की राजधानी रायपुर में एक गरिमामय समारोह में सूरजपुर जिला के नगरीय निकाय में जनप्रतिनिधि बने नेताओं को भाजपा की सांसद बृजमोहन अग्रवाल सम्मानित किया तथा इस अवसर पर कहा कि चाहे पार्टी कोई भी हो, अग्रवाल है तो मिलकर साथ देना है साथ ही समाज के सभी जनप्रतिनिधियों को इस बात को समझना ही होगा

अंबिकापुर विधायक राजेश अग्रवाल ने कहा किउनकी जीत में अग्रवाल समाज का सबसे बड़ा योगदान रहा है यह बात स्वयं सामाजिक एकता की ताकत बताता है।

अग्रवाल सभा रायपुर के अध्यक्ष विजय अग्रवाल उपस्थित अग्रवाल बंधुओ से कोई भी समस्या मिलजुल कर हल करने का आह्वान किया।

सूरजपुर जिला से पांच अग्रवाल समाज के नेताओं को किया गया सम्मानित- उक्त समारोह में सूरजपुर जिला की नगरिया निकाय भूमि निर्वाचित पांच जनप्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया जिसमें कृष्ण अग्रवाल अध्यक्ष नगर पंचायत शिवंदनपुर,शैलेश अग्रवाल उपाध्यक्ष नगर पालिका सूरजपुर,मुकेश गर्ग पार्षद , बिसेन अग्रवाल पार्षद ,मुकेश तायल पार्षद प्रतापपुर को सम्मानित किया गया

सम्मान मिलने पर गदगद हैं जनप्रतिनिधि तथा संगठन को आभार व्यक्त किया नगर पंचायत देवनंदनपुर की अध्यक्ष कृष्ण कुमार गोयल सम्मानित होने पर अपना अनुभव बताते हुए कहा कियह गरिमामयी आयोजन मेरे लिए केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि अग्रवाल समाज की शक्ति, परिपक्वता और एकजुटता का उत्सव था।हमारा समाज सदियों से न केवल व्यापार में अग्रणी रहा है, बल्कि शिक्षा, सेवा, राजनीति और धर्म के क्षेत्र में भी उसकी भूमिका अद्वितीय रही है।

आज जब भाजपा और कांग्रेस दोनों दलों के वरिष्ठ अग्र नेता एक ही मंच पर दिखाई दिए, तो यह स्पष्ट हो गया कि हमारे समाज में दलों से ऊपर उठकर समाज की प्रतिष्ठा सर्वोपरि है।यह गर्व की बात है कि चाहे मंच पर कोई भी विचारधारा हो, लेकिन जब विषय अग्र समाज का आता है, तो सभी स्वर एक हो जाते हैं। इस प्रेरणादायी पहल के लिए अग्रवाल सभा रायपुर एवं अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, छत्तीसगढ़ प्रदेश इकाई का कोटि-कोटि आभार व्यक्त करता हूं।साथ ही अपनी गरिमामयी उपस्थिति और विचारों से आयोजन को गौरवान्वित करने हेतु बृजमोहन अग्रवाल , राजेश अग्रवाल , राजीव अग्रवाल, विजय अग्रवाल एवं विश्वंभर अग्रवाल जी का हृदय से धन्यवाद देते हूं।।

संक्षिप्त समाचार

ऑनलाइन सट्टा वसूली करने वाला आरोपी गिरफ्तार

बिलासपुर(विश्व परिवार)। थाना तोरवा पुलिस ने ऑपरेशन प्रहार के तहत ऑनलाइन सट्टा खेलवाने वालों पर करारी चोट करते हुए एक बड़े खाईवाल की रकम वसूली करने वाले आरोपी को धरदबोचा है। आरोपी के पास से दो मोबाइल फोन, 1,50,320 रुपए नकद और सट्टे से संबंधित लेनदेन का रजिस्टर और बुलेट वाहन बरामद किया गया है। गिरफ्तार आरोपी में योगेश बोधवानी 25 वर्ष, निवासी शनिचरी बाजार, बाल्मीकि चौक है। आरोपी के खिलाफ धारा 7(1) छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 तथा धारा 112(2) भारतीय न्याय संहिता के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया है। बताया जाता है कि तितली चौक के पास कार्रवाई करते हुए आरोपी योगेश बोधवानी को रंगे हाथों पकड़ा गया। पूछताछ में आरोपी ने स्वीकार किया कि वह आईपीएल क्रिकेट मैच चेन्नई सुपर किंग्स बनाम लखनऊ सुपर जॉइंट्स के दौरान ऑनलाइन सट्टा खेलने वाले बड़े खाईवालों की रकम वसूलने आया था। पूछताछ के दौरान आरोपी ने खुलासा किया कि उसने घर पर बड़ी मात्रा में सट्टे की रकम छुपा कर रखी है। आरोपी को साथ लेकर पुलिस टीम उसके निवास स्थान पहुंची, जहां से 7.38 लाख नकद और अन्य सामान बरामद किया गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोरबा नगर का शारीरिक प्रधान कार्यक्रम हुआ संपन्न

कोरबा(विश्व परिवार)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोरबा नगर का शारीरिक प्रधान कार्यक्रम संपन्न हुआ। शारीरिक कार्यक्रम केवल एक विद्या नहीं है, अपितु वीरवृत्ति जगाने, हिम्मत और ताकत बढ़ाने वाले, सामूहिकता और अनुशासन उत्पन्न करने वाले संगठित समाज में जो-जो गुण चाहिए वे उत्पन्न करने वाले हैं। ज्ञान-विज्ञान के प्रसार हेतु भी शारीरिक स्वस्थता का आवश्यक होता है। स्वयंसेवकों को शारीरिक कार्यक्रम इसलिए सिखाया जाता हैं ताकि उसमे से संगठन के गुणों की वृद्धि हो। हिंदू समाज में जहां अपने लोगों से ठीक व्यवहार होता है वहाँ पूर्ण अहिंसा का पालन भी करना चाहिए। शाखाओं में होने वाले विभिन्न शारीरिक विषयों का प्रदर्शन एम.पी. नगर दशहरा मैदान परिसर में संपन्न हुआ। जिसमें मुख्य रूप से नियुद्ध, यष्टी, दंडयुद्ध, योगासन, पदविन्यास, सामूहिक समता, घोष आदि विषयों का उत्कृष्ट प्रदर्शन हुआ। जिसमें 150 स्वयंसेवको की सहभागिता पूर्ण गणवेश में रही। कोरबा नगर में दूसरी बार इस प्रकार के कार्यक्रम का संपन्न हो रहा है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राम नरेश दुबे, वक्ता नारायण नामदेव, सह प्रांत प्रचारक छत्तीसगढ़ प्रांत रहे। साथ ही मंच पर विभाग संघ चालक सत्येंद्रनाथ दुबे एवं नगर संघचालक अशोक तिवारी भी उपस्थित रहे। प्रतिवर्ष स्वयंसेवकों के दक्षता को रखने के लिए एवं प्रदर्शन के लिए यह कार्यक्रम आयोजित होता है।

आम आदमी पार्टी ने धूमधाम से मनाई अम्बेडकर जयंती

कोरबा(विश्व परिवार)। आम आदमी पार्टी कोरबा द्वारा संविधान निर्माता डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जी के 134वीं जयंती पर उन्हें याद कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। ग्रामीण अध्यक्ष जगलाल राठिया के नेतृत्व में रामपुर विधानसभा के ग्राम पंचायत बेदरकोना में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहां बतौर मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा अध्यक्ष प्रतिमा सिन्हा सचिव शत्रुघंन साहू शामिल हुए। इस खुशी के मौके पर पार्टी की ओर सेग्रामवासियों का मुंह मीठा कराया गया। करमा नृत्य की थाप वातावरण को और ही खुशनुमा बना रहा था । अपने उद्बोधन में लोक सभा अध्यक्ष प्रतिमा सिन्हा ने बताया कि हमारी पार्टी ने डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर जी के सिद्धांतों का हमेशा सम्मान किया है। उन्होंने कहा कि भारत की स्वतंत्रता के बाद, डॉ. अंबेडकर को संविधान प्रारूप समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था, उन्होंने भारतीय संविधान को एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और समतावादी दस्तावेज के रूप में तैयार किया। लोकसभा सचिव शत्रुघन साहू ने कहा कि संविधान में बाबा साहब ने सामाजिक न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों को मूल आधार बनाया। उन्होंने दलितों और पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की ताकि उन्हें समान अवसर मिल सके। उनका यह कार्य भारत के सामाजिक ढांचे में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष (ग्रामीण)जगलाल राठिया ने कहा की,आज जब हम अंबेडकर जयंती को मना रहे हैं, तो हमें इस बात का संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके बताए मार्ग पर चलकर सामाजिक न्याय की स्थापना करें, शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाएं, और भारत को एक सशक्त, समान और समावेशी राष्ट्र बनाने में अपना योगदान दें। आम आदमी पार्टी की ओर से लोकसभा कोषाध्यक्ष लहना सिंह रजपूतऋ जिला उपाध्यक्ष छबिलाल राठिया ,प्यारी लाल राठिया, बेलाल सिंह राठिया ,धर्मवीर राठिया,तुलसीराम राठिया, जिला मीडिया पभारी नरेश कुमार राठिया ,नरेंद्रकमार उपस्थिति रहे।

छत्तीसगढ़ बंग समाज कल्याण समिति के नवीन कार्यकारिणी की घोषणा

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-छत्तीसगढ़ बंग समाज कल्याण समिति का गठन एवं शपथ ग्रहण समारोह गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ इस दौरान सामाज संरक्षक सुबोध विश्वास, शिव शंकर दास, सुभाष राय, विमान मुखर्जी, रमेश विश्वास, गौर विश्वास एवं सलाहकार के.के.मिस्त्री एवं निरंजन विश्वास के उपस्थिति कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सर्वप्रथम स्वामी विवेकानंद के छायाचित्र के सम्मुख अतिथियों द्वारा पुष्पहार एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। पुनर्गठन समिति के प्रभारी रमेश विश्वास, सुनील विश्वास, कृष्ण मलिक, मंगल विश्वास एवं बासु सरदार ने नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष रामू घोष को प्रमाण पत्र प्रदान किया। तत्पश्चात संरक्षक सुबोध विश्वास ने श्री घोष को शपथ ग्रहण कराया। इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष रामू घोष ने समिति के प्रबंधकारिणी एवं कार्यकारिणी का घोषणा किया जिसमें उपप्रांताध्यक्ष सुशांत घोष, दिवाकर मुखर्जी, संदीप सरकार, रविंद्र राय,शिव दत्ता, कला चांद देवनाथ, सचिव पुलिन मंडल, सह सचिव बासु सरदार, कोषाध्यक्ष गोपाल हालदार, उप कोषाध्यक्ष संतोष सरदार,संयोजक समरेश कुमार मंडल, प्रवक्ता शैलेंद्र मंडल, सह प्रवक्ता नीलकमल मंडल, मुख्य संगठन मंत्री कृष्णा मालिक, संगठन मंत्री रविंद्र विश्वास, दिलीप मंडल, उत्तम कुमार दास, मीडिया प्रभारी सूरज दास, कार्यालय प्रभारी जगदीश मंडल, सह कार्यालय प्रभारी मुकेश मिस्त्री को बनाया गया। सभा को संबोधित करते हुए संरक्षक सुभाष राय ने आगंतुक सभी अतिथियों एवं गणमान्य लोगों का स्वागत कर संगठन को मजबूत बनाने का आह्वान करते हुए उन संस्थापक सदस्यों को याद किया जिन्होंने संगठन का शुरुआत किया था। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री घोष ने समाज के लोगों में एकता बनाए रखने तथा शिक्षा के स्तर को बढ़ाने पर बल दिए। कार्यक्रम के अंत में आभार व्यक्त समिति के सचिव पुलिन मंडल ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन निरंजन विश्वास द्वारा किया गया। सभा में विशेष रूप से राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से गणमान्य लोग एवं समिति के सदस्यगण उपस्थित हुए। जिसमें मुख्य रूप से संदीप घोष, सुशांत तहसीलदार, समीर हालदार, सतीश मंडल, सचिन राय, कर्ण धर राय, मनोज विश्वास, गौतम ठाकुर, सिद्धार्थ हालदार, तारक मंडल, दीपक चक्रवर्ती, विजय राय, सुदामा दास, कल्पना घोष, रेखा घोष, अंजलि घोष, पवन बर्मन, आलोक घोष, सुभाष नंदी, सुभाष मंडल, अजीत समझदार, श्यामल समझदार उपस्थित थे उक्त जानकारी संगठन सचिव पुलिन मंडल ने दी।

बंगाली समुदाय ने पारंपरिक संगीत के साथ मनाया बांग्ला

कोरबा(विश्व परिवार)। औद्योगिक नगरी कोरबा में निवासरत बंगाली समुदाय ने पारंपरिक उल्लास और सांस्कृतिक गरिमा के साथ बांग्ला नववर्ष पोइला बैसाख का स्वागत किया। इस अवसर पर बालकोनगर, कोरबा कालीबाड़ी मंदिर और रीक्रिएशन क्लब में रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें पारंपरिक संगीत, नृत्य, और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने विशेष आकर्षण बटोरें। बंगाली समाज के लिए पोइला बैसाख केवल कैलेंडर की तारीख नहीं, बल्कि एक नवचेतना और सामाजिक एकजुटता का उत्सव होता है। कालीबाड़ी परिसर एसईसीएल कॉलोनी और पोड़ीबहार स्थित मंदिर में धार्मिक अनुष्ठानों के साथ दिन की शुरुआत हुई। भक्तिमय भजनों और मंत्रोच्चारण के बीच बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। पूजा-अर्चना के उपरांत सामूहिक प्रसाद वितरण भी किया गया। समुदाय के लोगों ने पारंपरिक परिधानों में सजधज कर इस मौके को खास बनाया। महिलाओं ने लाल-सफेद साड़ियों में और पुरुषों ने परंपरागत वेशभूषा का उपयोग किया। पारंपरिक संगीत की स्वर लहरियों ने वातावरण को भावविभोर कर दिया। कोरबा बांग्ला संगठन के प्रतिनिधियों ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस बार भी नववर्ष को बड़े उत्सव के रूप में मनाया गया। इस वर्ष आयोजित कार्यक्रमों में खासतौर पर नृत्य प्रतियोगिता, संगीत प्रतियोगिता, और बच्चों के लिए ड्राइंग एवं कविता पाठ जैसी गतिविधियां रखी गईं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उभरती प्रतिभाओं को मंच देने का प्रयास किया गया। विजेताओं को सम्मानपत्र और स्मृति चिन्ह देकर प्रोत्साहित किया गया। कोरबा में बड़े स्तर पर यह आयोजन 17 अप्रैल को संपन्न होगा।

कुदमुरा रेंज में फिर पहुंचा हाथियों का दल, ग्रामीणों को किया अलर्ट

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के कुदमुरा वन परिक्षेत्र में 39 हाथियों का दल एक बार फिर पहुंच गया है। हाथियों के इस दल को आज सुबह रेंज के गीतकुंआरी जंगल में विचरण करते हुए देखा गया। बड़ी संख्या में हाथियों के क्षेत्र में पहुंचने से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है, वहीं वन अमला भी सतर्क हो गया है। मौके पर पहुंचकर हाथियों की निगरानी करने के साथ गांवों में मुनादी कराने का काम भी शुरू कर दिया गया है। लोगों को हाथियों के आने की जानकारी देते हुए उनसे दूरी बनाए रखने की अपील की जा रही है। हाथियों का यह दल काफी दिनों से धरमजयगढ़ एवं कोरबा के कुदमुरा रेंज में सक्रिय है। हाथियों का दल कभी धरमजयगढ़ वनमंडल के जंगल पहुंच जाता है तो कभी जिले के कुदमुरा वन परिक्षेत्र में। हाथियों का यह दल तीन दिन पहले धरमजयगढ़ की ओर गया था लेकिन 48 घंटे तक वहां के जंगल में विचरण करने के बाद आज तडके फिर वापस आ गया और गीतकुंआरी के जंगल में विचरण करने के साथ डेरा डाल दिया है। उधर करतला वन परिक्षेत्र के चिकनीपाली जंगल में आधा दर्जन हाथियों की मौजूदगी लगातार बनी हुई है। यहां हाथियों ने एक गुफानुमा स्थल को अपना रहवास बनाया है और काफी दिनों से यहीं डेरा डाले हुए है।

संजय सिंह विश्रामपुर का 32 वाँ महाप्रबंधक बने आज ली प्रभार

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-एस ई सी एल बिश्रामपुर क्षेत्र का नए महाप्रबंधा के रूप में संजय सिंह ने अपना प्रभार ग्रहण कर लिया।आज उन्हों पूर्व महाप्रबंधक अजय तिवारी ने अपना महाप्रबंधक का प्रभार सौंप दिया । जानकारी के अनुसार एस ई सी एल बिलासपुर मुख्यालय से 15 अप्रैल को बिलासपुर मुख्यालय के महाप्रबंधक सुजाता रानी ने 23 अधिकारियों को एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित किया था तथा उन्हें तत्काल स्थानांतरित क्षेत्र में अपना पदभार ग्रहण करने का निर्देश भी दिया था। इस स्थानांतरण में विश्रामपुर क्षेत्र के अजय तिवारी को बिलासपुर मुख्यालय में स्थानांतरित किया था ।श्री तिवारी महाप्रबंधक के रूप में पिछले 9 सितंबर 2023 को विश्रामपुर में पदभार ग्रहण किया था ।आज उन्हें बिलासपुर हेडक्वार्टर स्थानांतरित कर दिया गया जबकि नए महाप्रबंधक संजय सिंह विश्रामपुर क्षेत्र में ऑपरेशन जी एम का दायित्व निभा चुके हैं उन्हें विश्रामपुर क्षेत्र का भौगोलिक दिशा एवं संस्कृति एवं ग्रामीणों में जबरदस्त पैठ होना बताया जाता है ।आज संजय सिंह क्षेत्र का 32 वाँ महाप्रबंधक का पदभार ग्रहण कर लिया है।

जिला पंचायत सदस्य कालेश्वरी कुर्रे ने वन विकास निगम के अध्यक्ष राम सेवक पैकरा को लड्डूओ से तौला

वन विकास निगम के अध्यक्ष रामसेवक पैकरा का विश्रामपुर में भव्य स्वागत

रामसेवक पैकरा ने दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर में माथा टेका

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-छत्तीसगढ़ शासन द्वारा पूर्व गृह मंत्री राम सेवक पैकरा को वन विकास निगम के अध्यक्ष बनाया है ।अध्यक्ष बनने के बाद श्री पैकरा का आज विश्रामपुर आगमन हुआ जहां सैकड़ो कार्यकर्ताओं ने पुष्प वर्षा, आतिशबाजी एवं मालाओ से आत्मीय स्वागत किया तो वहीं जिला पंचायत सदस्य कलेश्वरी पकुर्रे ने बस स्टैंड में श्री पैकरा का 90 किलो लड्डू से तौल कर सम्मानित किया ।

इस दौरान श्री पैकरा का स्वागत करने का कार्यकर्ताओं की होड़ लगी रही ।जिले के वरिष्ठ नेताओं एवं प्रेम नगर विधायक भूलन सिंह मरावी तथा रेड क्रॉस सोसाइटी के अध्यक्ष बाबूलाल गोयल भी श्री पैकरा के साथ रहे।

बस स्टैंड में कार्यकर्ताओं ने जबरदस्त आत्मीय ।स्वागत किया बस स्टैंड में स्वागत के पश्चात रामसेवक पैकरा दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर पहुंचकर माता टेका और आशीर्वाद लिया ।मंदिर के मुख्य पुजारी भोले जी महाराज ने पूजा अर्चना कराई। यहां भी कार्यकर्ताओं की भीड़ जबरदस्त देखी गई ।कार्यकर्ता पुष्प वर्षा करते रहे अपनी भव्य स्वागत से अभिभूत पैकरा ने कार्यकर्ताओं के प्रति अपना आभार प्रकट किया।पूजा अर्चना से पूर्व बस स्टैंड में उनके स्वागत सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए रामसेवक ने कहा कि आप सबों का आशीर्वाद हमेशा हमारे ऊपर बनता आ रहा है हम सब मिलकर क्षेत्र का सर्वांगीण विकास करेंगे। क्षेत्र की कोई भी समस्या हो हमसे मिलिए निदान अवश्य करेंगे ।आपका इस स्वागत के लिए सभी का कोटि नमन करते हैं तथा आभार प्रकट करते हैं। इस स्वागत समारोह में जिला पंचायत सदस्य कलेश्वरी कुर्रे ,जिला पंचायत के पूर्व सदस्य सत्यनारायण जायसवाल, जिला भाजपा के पूर्व अध्यक्ष अजय गोयल,नगर पंचायत विश्रामपुर की पूर्व अध्यक्ष राजेश यादव ,वर्तमान अध्यक्ष श्रीमती निर्मला यादव ,महिला मोर्चा के श्याम पांडे, श्रीमती मोहनी झा, नगर पंचायत शिवनंदनपुर के अध्यक्ष के के बलू गोयल, उपाध्यक्ष श्याम साहू सहित पार्षद रवि शंकर बउबा ,अमरेश, पिंटू यादव , दिना सिंह यादव, सूरजपुर नगर पालिका पार्षद मुकेश गर्ग, नगर पंचायत विश्रामपुर की उपाध्यक्ष दीपेंद्र सिंह चौहान, जिला भाजपा उपाध्यक्ष अनूप सिंह ,संजीत सिंह ,अशोक अग्रवाल , सीती कांत स्वाई, इंजीनियर विनय सिंह, श्रमिक नेता लखन कुर्रे, अंजू सिंह, राजकिशोर चौधरी, मनी बग्गा, विनोद साह,बाबूलाल यादव ,शशि गर्ग ,छोटू अग्रवाल सतीश तिवारी आदि उपस्थित थे।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर गुरूवार 17 अप्रैल 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

आप हमारे अपने

नक्सलियों से गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि आप हमारे अपने हैं। हथियार डाल कर मुख्यधारा में शामिल हों। जब कोई नक्सली मारा जाता है, तो कोई भी खुश नहीं होता। दंतेवाड़ा में बस्तर पंडुम महोत्सव में समापन समारोह में शाह ने कहा कि मार्च, 2026 तक नक्सल समस्या को खत्म करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। नक्सलमुक्त घोषित गांवों को एक करोड़ रुपये की विकास निधि देने तथा नक्सलियों की सुरक्षा और पुनर्वास की व्यवस्था सरकार द्वारा सुनिश्चित करने की बात भी उन्होंने की। शाह के बस्तर प्रवास के दरम्यान छत्तीसगढ़ के 86 नक्सलियों ने हैदराबाद में सामूहिक समर्पण किया जिनमें बीस नक्सल महिलाएं भी शामिल हैं। पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव से 1967 में शुरू किसानों के विद्रोह को नक्सलवाद कहा गया। इसमें शामिल लोगों को नक्सलवादी या नक्सल कहा जाने लगा। इन्हें मुख्यतया वामपंथी आंदोलनों से जोड़ा जाता है जो माओवादी राजनीतिक विचारधारा का पालन करते हैं। सरकार के अनुसार देश में नक्सल प्रभावित जिले सत्रह से घट कर छह रह गए हैं। छत्तीसगढ़, तेलंगाना, झारखंड और ओडिशा में इनकी जड़ें फैली हुई हैं। बिहार के विभिन्न जिलों को नक्सलमुक्त घोषित किए जाने के बावजूद अभी भी दस जिलों में इनका प्रभाव है। सरकार के प्रति नाराजगी और बुनियादी जरूरियात की मांग को लेकर ये उग्र प्रदर्शन करते रहे हैं। पिछले दिनों नक्सलियों की सेंट्रल कमेटी ने पर्चा जारी करके सरकार से युद्धविराम की मांग की। नक्सल प्रभावित इलाकों के नौजवान अब बेहतर शिक्षा और रोजगार की तलाश में अपना वक्त लगाना बेहतर मान रहे हैं। जान बचाने के लिए घने जंगलों में भटकने या सुरक्षा बलों का निशाना बनने को वे राजी नहीं हो रहे। गुरिल्ला युद्ध की ट्रेनिंग लेकर हथियारबंद लड़ाकों को लगातार रिहाइशी इलाकों की तरफ जाने से रोका जा रहा है। दशकों से चले आ रहे इस सशस्त्र वामपंथी आंदोलन को नेस्तनाबूद करने को दृढ़संकल्पित केंद्र सरकार सफल होती दिख रही है। हालांकि ग्रामीण और बीहड़ इलाकों तक विकास, सड़कें, विद्यालय और स्वास्थ्य केंद्रों के साथ ही रोजगार के साधनों की ठोस व्यवस्था ही नौजवानों को मतिभ्रम से दूर रख सकती है। मात्र ओजस्वी भाषणों के भरोसे उनके आवेग/गुस्से को रोका जाना मुश्किल है।

बलूचिस्तान का तीर्थ हिंगलाज धाम

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

तमाम राजनीतिक व मजहबी उथल-पुथल के बाद भी बलूचों, पश्तूनों और सिन्धियों की हिंगलाज देवी के प्रति आस्था व विश्वास कम नहीं हुआ। इन बिरादरियों के बहुत से लोग भी हिंगलाज माता को अपनी कुलदेवी मानते हैं। इस मंदिर के बेहतर रखरखाव की जरूरत है चैत्र-वैशाख का मास हो और हिंगलाज देवी तीर्थ स्थल की चर्चा न हो, यह संभव नहीं है। बलूचिस्तान में लासबेला कभी रियासत हुआ करती थी। लास का अर्थ है समतल मैदान और बेला का अर्थ है जंगल। लेकिन अब यह रियासत बलोचिस्तान का ही हिस्सा है। इसमें कोई शक नहीं कि यह समतल भी है और यहां जंगल भी है। लेकिन जहां जंगल होगा, वहां पहाड़ भी होना चाहिए। सचमुच यहां पहाड़ भी है। दरअसल बलोचिस्तान में मकरान के विशाल मरुस्थल में खेरथार पर्वत श्रंखला सभी को आकर्षित करती है। यह सारा क्षेत्र सिंध प्रदेश से जुड़ा हुआ है। इस खेरथार पर्वत श्रंखला के अंतिम चरण में शिखर पर सप्तसिन्धु क्षेत्र का ऐतिहासिक तीर्थ धाम स्थित है। इसी पर्वत के चरणों मे हिंगोल नदी बहती है। वैसे हिंगोल का अर्थ लाल होता है। यह तीर्थ धाम सिन्ध प्रदेश की राजधानी कराची से लगभग 250 किलोमीटर, ग्वादर से 125 किलोमीटर की दूरी पर है। वैसे कहा जा सकता है कि अरब सागर इस तीर्थ क्षेत्र के चरण पखारता है क्योंकि अरब सागर इससे केवल बीस किलोमीटर दूर है। इस तीर्थ धाम में अनेक ऐतिहासिक मंदिर स्थित हैं, लेकिन इस इतिहास का आरंभ होता है हिंगलाज माता के मंदिर से। पहाड़ की अनेक गुफाओं में से एक गुफा में हिंगलाज माता पिंडी रूप में विद्यमान हैं। हिंगलाज देवी का यह मंदिर बावन शक्तिपीठों में से एक है। देश भर में फैले सती के बावन शक्तिपीठों में से एक बलूचिस्तान में स्थित है और दूसरा सिन्ध प्रदेश में कराची में स्थित है। सती के इन बावन शक्तिपीठों का इतिहास अफगानिस्तान से लेकर कन्याकुमारी तक जन स्मृतियों का सनातन हिस्सा है। इसलिए सबसे पहले इस इतिहास की चर्चा। दक्ष प्रजापति अपने समय के महाप्रतापी राजा थे। उनकी पुत्री सती ने पिता की इच्छा के विपरीत शंकर से विवाह किया था। इसलिए प्रजापति ने अपनी पुत्री और दामाद से सभी संबंध तोड़ लिए थे। एक बार प्रजापति ने यज्ञ का आयोजन किया था। उसमें उसने सभी देवी-देवताओं को आमंत्रित किया, लेकिन अपने दामाद और पुत्री सती को निमंत्रण नहीं भेजा। महर्षि नारद घूमते हुए आए तो उन्होंने सती को बताया कि उसके पिता बहुत बड़ा यज्ञ कर रहे हैं। तब सती ने अपने पिता के इस यज्ञ में जाने का निर्णय कर लिया। शिव ने समझाया कि बिना निमंत्रण के कहीं जाना सम्मानजनक नहीं होता। लेकिन सती का तर्क था कि पिता के घर जाने के लिए भला पुत्री को निमंत्रण की आवश्यकता होती है? शिव के रोकने के बावजूद सती अपने पिता के इस यज्ञ समारोह में पहुंच गईं। यज्ञ में सभी सगे संबंधी उपस्थित थे। सती ने अपने पिता दक्ष से पूछ लिया कि आपने शंकर जी को क्यों नहीं बुलाया। दक्ष ने सभी के सामने गुस्से में आकर शंकर के लिए अपशब्द कहे। सती पिता के इस व्यवहार से अत्यंत आहत और अपमानित हुईं और उसने वहीं यज्ञ अग्निकुंड में कूद कर अपने प्राण दे दिए। शंकर जी को इस दुर्घटना का पता चला। वे क्रोधोन्मत्त हो उठे। उनके गणों ने तांडव मचा दिया। सभी आमंत्रित अतिथि इधर-उधर भाग गए। यज्ञ विध्वंस हो गया। शिव ने सती का शरीर अग्निकुंड से निकाला और उसे कंधे पर उठाकर चल पड़े। उनके दु:ख का आवेग शांत नहीं हो रहा था। लगता था वे अपने क्रोध की अग्नि से सारे संसार को राख कर देंगे। जाहिर है इससे सभी को चिंता हुई। जब तक शंकर के कन्धे पर सती का शरीर रहेगा तब तक वे शांत नहीं होंगे। विष्णु ने इसका समाधान निकाला। वे अपना सुदर्शन चक्र लेकर शंकर के पीछे चल पड़े और समय देख कर सती के शरीर का कोई न कोई अंग काटने लगे। सती के शरीर के बावन अंग देश के अलग-अलग भागों में गिरे और कालांतर में उन सभी स्थानों पर बावन शक्तिपीठों की स्थापना हुई। कहा जाता है कि जिस स्थान पर ब्रह्मरंध्र यानी सिर का ऊपरी भाग गिरा, वहां हिंगलाज देवी के नाम से शक्ति पीठ बना। धीरे-धीरे यह सप्त सिंधु क्षेत्र के ऐतिहासिक तीर्थ स्थल के रूप में विकसित हो गया। इस तीर्थ स्थल पर हिंगलाज देवी के मंदिर के अतिरिक्त शंकर का मंदिर है। गणेश जी, काली माता का भी मंदिर है। इसके अतिरिक्त राम झरोखा है। ब्रह्म कुंड, क्षीर कुंड, अनिल कुंड तो हैं ही, इसके साथ अघोर पूजा मंदिर भी विद्यमान है। यानी कार्तिकेय को छोडक़र पूरा शिव परिवार तो है ही, वैष्णवों का राम झरोखा भी विद्यमान है। माना जाता है कि इस तीर्थ धाम में चौरासी पर्वतों का समूह है। एक प्रकार से यह देव स्थल है। पहाड़ों के शिखरों को देख कर कुछ लोग इन्हें मिट्टी की ज्वालामुखियों से निर्मित भी मानते हैं। यहां की चन्द्र गुफा में ही माता विद्यमान है। लेकिन धीरे धीरे इस तीर्थ स्थल का तो क्या, पूरे सप्त सिन्धु क्षेत्र का ही परिदृश्य बदलने लगा। सातवीं शताब्दी में जब अरब क्षेत्र में इस्लाम पंथ का उदय हुआ तो उसका प्रभाव अफगानिस्तान तक भी पहुंचा, लेकिन इसे वहां तक पहुंचने में लगभग तीन सौ साल लगे। वैसे 712 में एक अरब सेनापति मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध के रास्ते भारत के अंदर घुसने की कोशिश की थी। लेकिन वह सिंध से आगे नहीं बढ़ सका। अफगानिस्तान तक पहुंचने के लिए इस्लाम पंथ को तीन सौ साल लगे। उसने यह यात्रा 1000 के आसपास पूरी की। अफगानिस्तान के पश्तूनों और खत्रियों ने अरबों व तुर्कों का मुकाबला तो किया, पर सफलता नहीं मिली। ध्यान रखना चाहिए जिस समय तुर्क अफगानिस्तान पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे थे, उस समय अफगानिस्तान में खत्री बिरादरी ही सरकार चला रही थी। उसे हिंदुशाही कहा जाता है। पश्तून उस समय तथागत बुद्ध की पताका लहरा रहे थे। लेकिन तुर्कों के हमलों व विजय ने सब उथल पुथल कर दिया। इस पराजय के बाद ही पश्तून, हजारा, बलूच, सिंधी व खत्री बिरादरी के लोगों ने इस्लाम पंथ को स्वीकार कर लिया। लेकिन इसे आश्चर्य ही कहा जाएगा कि इस्लाम पंथ को अपनाने के लिए खत्री आगे नहीं आए। कुछ खत्री भी इस्लाम पंथ में मतांतरित हो गए, लेकिन अधिकांश ने अपनी सनातन परंपरा को ही पकड़े रखा। शायद इसका बहुत बड़ा कारण नाथ पंथ और कालांतर में नानक पंथ भी रहा हो। हिंगलाज देवी मंदिर पर्वत पर गुरु गोरखनाथ धूनी और गुरु नानक देव खाराओ को इसी पृष्ठभूमि में समझा जा सकता है। कहा जाता है कि हिंगलाज देवी तीर्थ यात्रा तभी पूरी मानी जाती है जब देवी मंदिर के बाद गोरखनाथ धूनी और नक खाराओ के भी दर्शन कर लिए जाएं। इस्लाम के प्रवाह को रोकने में नाथ परम्परा और दशगुरू परंपरा का सर्वाधिक योगदान कहा जा सकता है। इसमें कितनी सफलता मिली कितनी नहीं, यह बहस का विषय हो सकता है, लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि सप्त सिन्धु क्षेत्र के पश्तूनों, बलोचों, खत्रियों और सिद्धियों ने मजहब तो बदल लिया, लेकिन किसी न किसी रूप में या फिर किसी न किसी अंश रूप में अपनी सनातन परम्पराओं को भी पकड़े रखा। इसीलिए देसी मुसलमान अभी भी हिंगलाज देवी मंदिर को नानी का घर कहते हैं। हिंगलाज देवी खत्रियों की कुलदेवी है। यही कारण है कि नवरात्रों में बलूचिस्तान, खैबर पख्तूनखवा, सिन्ध और पश्चिमी पंजाब से जो तीर्थ यात्री आते हैं, उनमें से अधिकांश खत्री बिरादरी के ही होते हैं। दरअसल खत्री बिरादरी क्षत्रिय शब्द का ही अपभ्रंश है। तमाम राजनीतिक व मजहबी उथल-पुथल के बाद भी बलूचों, पश्तूनों और सिन्धियों की हिंगलाज देवी के प्रति आस्था व विश्वास कम नहीं हुआ।

आलेख

कांग्रेस को 10 में से 10 नंबर दिए जा सकते हैं

अजीत द्विवे

अगर कोशिशों के लिए नंबर देना हो तो कांग्रेस को 10 में से 10 नंबर दिए जा सकते हैं। कुछ समय पहले तक वह कोशिश भी नहीं कर रही थी। लेकिन अब पार्टी संगठन को बदलने और उसमें जोश भरने की गंभीर कोशिश की जा रही है। कांग्रेस नेतृत्व के बारे में धारणा बदलने की कोशिश हो रही है। पार्टी को नए समय की चुनौतियों और राजनीतिक मुद्दों के मुताबिक ढालने की कोशिश भी चल रही है। पुरानी विरासत को हासिल करने का प्रयास भी हो रहा है और सबसे ऊपर कांग्रेस का स्वंतत्र अस्तित्व स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। कामयाबी की संभावना अभी नहीं दिख रही है लेकिन व्यक्ति के जीवन की तरह ही राजनीति में भी कई बार बहुत नजदीक की चीजें नहीं दिखाई देती हैं। इसलिए कांग्रेस की कोशिशों का क्या हासिल होगा उसके बारे में समय बताएगा। यह कहना बहुत आसान है कि कांग्रेस लड़ना या जीतना भूल गई है या कांग्रेस की मारक क्षमता कम हो गई या नरेंद्र मोदी से मुकाबले के लिए उसके पास कोई नेतृत्व नहीं है या कांग्रेस के अखिल भारतीय संगठन का ढांचा चरमराया हुआ है। हकीकत यह है कि इसके बावजूद कांग्रेस लड़ रही है, लगातार पराजय और विपरीत परिस्थितियों के बाद भी कांग्रेस नेतृत्व मैदान में टिका है और सब कुछ ठीक करने की कोशिश कर रहा है। कांग्रेस व राहुल की असफलताओं पर विचार करने से पहले यह ध्यान रखना चाहिए कि उसका प्रतिद्वंद्वी कितना शक्तिशाली है और और वह क्या क्या कर सकता है! सो, गुजरात के अहमदाबाद में मंगलवार, आठ अप्रैल से होने जा रहे दो दिन के कांग्रेस अधिवेशन के बहाने कांग्रेस की कोशिशों पर चर्चा करने की जरुरत है। कांग्रेस सबसे पहले तो अपनी विरासत को हासिल करने का प्रयास कर रही है। असल में 2014 में कांग्रेस जितनी बुरी तरह से हारी वह उसके लिए बहुत बड़ा झटका था। हारना कांग्रेस के लिए कोई नई बात नहीं थी लेकिन किसी ने नहीं सोचा था कि पार्टी 44 सीट पर सिमट जाएगी। इतनी बुरी तरह से हारने की वजह से उसको संभलने में इतना समय लगा है। इस अवधि में वह पूरी तरह से सदमे में रही। कोई नया आइडिया तो पार्टी के पास नहीं ही था वह पुरानी विरासत भी भूल गई और भाजपा ने इसका फायदा उठाया। उसने कांग्रेस के महापुरुषों को अपना बना कर कांग्रेस की साख बिगाड़ी। प्रधानमंत्री के दावेदार के तौर पर चुनाव लड़ रहे नरेंद्र मोदी ने मदन मोहन मालवीय के परिजनों को अपना प्रस्तावक बनाया। उसने पंडित मदन मोहन मालवीय से लेकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लालबहादुर शास्त्री और यहां तक कि महात्मा गांधी को भी अपना बताना और बनाना शुरू कर दिया। वास्तविकता यह है कि इनमें से लगभग सभी लोग भाजपा के पूर्ववर्ती संगठन और आरएसएस दोनों के विचारों के घनघोर विरोधी रहे हैं। अब जाकर कांग्रेस संभली है तो उसने अपनी विरासत हासिल करने का प्रयास शुरू किया है। कांग्रेस अपने दो दिन के अधिवेशन के पहले दिन आठ अप्रैल को अहमदाबाद के शाहीबाग में स्थित सरदार पटेल मेमोरियल में कार्य समिति की बैठक करेगी। दूसरे दिन नौ अप्रैल को साबरमती के किनारे कांग्रेस अधिवेशन का मुख्य कार्यक्रम होगा। कांग्रेस 61 साल के बाद गुजरात में अधिवेशन कर रही है और यह संयोग नहीं है कि इस साल सरदार पटेल की डेढ़ सौवीं जयंती मनाई जा रही है। सरदार की डेढ़ सौवीं जयंती पर कांग्रेस ने गुजरात में अधिवेशन का फैसला किया तो इसका कहीं न कहीं यह अर्थ है कि वह सरदार पटेल की विरासत को वापस हासिल करना चाहती है। कांग्रेस के बाद के नेताओं ने खास कर माधव सिंह सोलंकी ने कांग्रेस को खाम (केएचएएम) यानी क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी, मुस्लिम की राजनीति में समेटा था। इसका कुछ लाभ तो पार्टी को मिला लेकिन उसके बाद जब हार का सिलसिला शुरू हुआ तो यह समीकरण काम नहीं आया। अब कांग्रेस इस समीकरण से बाहर निकल कर आजादी के बाद के सबको साथ लेकर चलने के समीकरण पर काम कर रही है। विरासत वापस हासिल करने की कोशिश कांग्रेस ने पिछले साल दिसंबर के अंत में बेलगावी अधिवेशन से शुरू की।

फटकार खाकर भी नहीं सुधरी देश की पुलिस

योगेंद्र योगी

राजद्रोह कानूनों का मनमाना प्रयोग तथा कार्यकर्ताओं और पत्रकारों की लक्षित गिरफ्तारियां इस बात को उजागर करती हैं कि पुलिसिंग प्राय: विधि के शासन के बजाय राजनीतिक हितों से प्रेरित होती है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा वर्ष 2017 में कराए गए एक सर्वे के मुताबिक भारत में पुलिस विभाग सबसे ज्यादा भ्रष्ट है नेताओं के हाथों की कठपुतली बनी पुलिस प्रणाली देश के आम लोगों का विश्वास जीतने में पूरी तरह नाकाम रही है। पुलिस का आचरण और व्यवहार आजादी के बाद भी सामंती बना हुआ है। अपराध रोकने की जिम्मेदारी निभाने वाली पुलिस के अपराधियों की तरह आचरण करने से वर्दी दागदार हो रही है। पुलिस राज्यों के अधिकार क्षेत्रों में होने के कारण सत्तारूढ़ दलों के इशारों के बगैर काम नहीं करती है। ऐसे ही हालात पुलिस पर पक्षपात करने के जिम्मेदार हैं। अधीनस्थ से लेकर देश की शीर्ष अदालत ने कई बार पुलिस की कारगुजारियों को उजागर किया है। इसके बावजूद पुलिस के रवैये में कोई खास बदलाव नहीं आया है। सुप्रीम कोर्ट ने दीवानी मामले में आपराधिक कानून लगाने पर उत्तरप्रदेश (यूपी) पुलिस को फटकार लगाई। अदालत ने कहा कि यूपी पुलिस की ओर से दीवानी मामलों में दर्ज की गई प्राथमिकियों पर गौर करने से पता चलता है कि राज्य में कानून का शासन पूरी तरह ध्वस्त हो गया है। पुलिस के कुकृत्य सिर्फ मनमर्जी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पुलिस अपराधियों को पकडऩे के बजाय कई मामलों में खुद अपराधी बन बैठी है। पंजाब के चर्चित मोगा सेक्स स्कैंडल में मोहाली स्थित कोर्ट ने 4 पुलिस अधिकारियों को सजा सुनाई है। मोगा सेक्स स्कैंडल साल 2007 में सुर्खियों में आया। उस समय पंजाब में अकाली-भाजपा गठबंधन की सरकार थी। इस स्कैंडल में कई हाई प्रोफाइल राजनेता और सीनियर पुलिस अधिकारी शामिल थे। ये सब मिलकर अमीर लोगों को देह व्यापार में फंसाते थे। पुलिस की कारगुजारियों का पर्दाफाश सुप्रीम कोर्ट ने एक मृत्युदंड के मामले में भी किया है। सुप्रीम कोर्ट ने हत्या के आरोप में निचली अदालत से मौत की सजा प्राप्त एक युवक को बरी करते हुए पुलिस प्रक्रिया पर तीखी टिप्पणियां की। सुप्रीम कोर्ट ने मामले की सभी फोरेंसिक और गवाहों की रिपोर्टों की बारीकी से समीक्षा की और पाया कि आरोपी के खिलाफकोई विश्वसनीय सबूत नहीं था। इस तरह एक निर्दोष व्यक्ति ने 10 साल फांसी की सजा के साए में जेल में बिताए, जबकि पुलिस और न्यायिक व्यवस्था की नाकामी साफ नजर आई। सुप्रीम कोर्ट पुलिस और सत्तारूढ़ दलों के नापाक गठजोड़ को कई बार उजागर कर चुका है। सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश रहे एनवी रमना ने एक मामले में कहा था कि देखा जा रहा है कि पुलिस के अधिकारी सत्ता में मौजूद राजनीतिक पार्टी का फेवर करते हैं और सत्ता पक्ष के विरोधियों के खिलाफ कार्रवाई करते हैं। बात यहीं खत्म नहीं होती, जब विरोधी पक्ष के लोग सत्ता में आते हैं तो उन्हीं पुलिस अफसरों पर कार्रवाई करते हैं। देश में इस तरह का जो ट्रेंड दिख रहा है वह काफी परेशान करने वाला है। मुख्य न्यायाधीश रमना ने कहा था कि इसके लिए पुलिस विभाग को ही जिम्मेदार ठहराना चाहिए। पुलिस को चाहिए कि वह कानून के शासन पर टिकी रहे। वह सत्ता और विपक्ष किसी के साथ न होकर स्वतंत्र रूप से काम करे। सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी छत्तीसगढ़ के निलंबित अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक गुरजिंदर पाल सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए की थी। पाल के खिलाफ पुलिस ने सत्तारूढ़ दल के इशारे पर आय से अधिक सम्पत्ति और राजद्रोह का मामला दर्ज किया था। भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ का हिस्सा रहे न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला ने कोलकाता चिकित्सक के बलात्कार-हत्याकांड की सुनवाई के दौरान कहा था कि कोलकाता पुलिस ने इस मामले को जिस तरह से संभाला, वह कुछ ऐसा है जो उन्होंने अपने जीवन के 30 वर्षों में नहीं देखा। शीर्ष अदालत ने अप्राकृतिक मौत के मामले के पंजीकरण में देरी की आलोचना की। पुलिस की मौजूदा कार्यप्रणाली को लेकर देश में कई सुधार करने के प्रयास हुए हैं, किन्तु सत्तारूढ़ दलों के नेताओं ने ऐसे प्रयासों को नाकाम करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी। स्वतंत्रता के बाद से ही, इस व्यवस्था में सुधार की मांग उठती रही है, क्योंकि यह भ्रष्टाचार, अकुशलता और जनता में अविश्वास का कारण बनी हुई है। पुलिस सुधारों के लिए कई आयोगों और समितियों का गठन किया गया। राष्ट्रीय पुलिस आयोग (1977-1981) और वर्ष 1971 में बनी गोर समिति की रिपोर्ट की सिफारिशें धूल खा रही हैं। सुप्रीम कोर्ट ने भी वर्ष 2006 में प्रकाश सिंह मामले में पुलिस सुधारों पर कई निर्देश दिए, जिनमें यह भी शामिल था कि राज्य पुलिस प्रमुखों का दो वर्ष का निश्चित कार्यकाल होगा। निर्देशों में राज्य सुरक्षा आयोगों की स्थापना, वरिष्ठ अधिकारियों के लिए निश्चित कार्यकाल और कानून एवं व्यवस्था से जांच को अलग करना शामिल था। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों की भी राज्यों ने पालना नहीं की। इसे देश के सभी राज्यों ने या तो लागू नहीं किया या फिर निर्देशों को आधे-अधूरे तरीके से लागू किया गया। ताकि पुलिस में सत्तारूढ़ दलों का हस्तक्षेप पूरी तरह से बना रह सके। इन सिफारिशों को लागू नहीं करने के मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई चल रही है। दिल्ली की वर्ष 2019 की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि 72 प्रतिशत पुलिस अधिकारियों ने मामलों की जांच करते समय राजनीतिक दबाव का अनुभव किया है। पुलिस प्राय: अत्यधिक बल का प्रयोग करती है, विशेषकर विरोध प्रदर्शनों और नागरिक अशांति से निपटने में। अप्रैल 2017 से मार्च 2022 तक पिछले पांच वर्षों में देश भर में पुलिस हिरासत में मौत के कुल 669 मामले दर्ज किए गए। इसके अलावा भारत में अपराध विज्ञान के क्षेत्र में इतने सारे अवसर होने के बावजूद प्रति 0.1 मिलियन जनसंख्या पर केवल 0.33 फोरेंसिक वैज्ञानिक हैं।

भारतीय राष्ट्र के सामने चुनौतियां...

कुलभूषण उपमन्यु

हर धर्म में समय से कुछ कमियां आ जाती हैं, इसलिए स्वयं ही उनके संशोधन को तैयार रहना चाहिए। गांधी ने इस दिशा में जातिवादी भेदभाव को समाप्त करने के लिए खुलेआम आवाज उठाई और जीवनपर्यन्त उसके लिए सच्चाई से लगे रहे स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही यह अनुभव किया जाने लगा था कि सदियों की गुलामी के चलते भारतीय समाज में अपनी आंतरिक इच्छा शक्ति, आत्मविश्वास, नवाचार की खोज करने की बौद्धिक क्षमता, आपसी विश्वास की भारी कमी आ गई है। सदियों से दबे कुचले समाज को अपने शासकों के शोषण को झेलते हुए जैसे-तैसे दांव-पेच से जीवनयापन करने के लिए समझौते करते हुए समय निकालने की आदत हो गई है। कभी धर्म बदल कर तो कभी शासकों के शोषण की कमी अपने से कमजोर वर्गों का शोषण करके पूरी करने के प्रयासों के आदी होकर अपने झूठे अहंकार को संतुष्ट करने के प्रयासों के चलते खंडित समाज की रचना हो चुकी है। देश का शासन संभालते हुए राष्ट्र पुर्निर्माण करने का काम सिर पर है। इस काम को कैसे किया जाए, यह चुनौती आसान नहीं थी। एक ओर देश को भारतीय दृष्टि से अपनी नींव पर खड़ा करने की समझ थी, जिसके समर्थक गांधी और उनकी सोच पर विश्वास करने वाले लोग थे, तो दूसरी ओर अंग्रेजी सोच से प्रभावित नेहरू और उनके वैचारिक समर्थक थे। हालांकि गांधी ने इस बहस को सार्वजनिक करने के प्रयास किए, किन्तु नेहरू ने इस बहस को यह कह कर टाल दिया कि इस बात का फैसला तो चुने हुए प्रतिनिधि ही करने के अधिकारी होंगे। यह बहस इसलिए भी आगे न बढ़ सकी क्योंकि उस समय सबसे पहली प्राथमिकता स्वतंत्रता प्राप्त करना थी। इस बहस से यह खतरा था कि आपसी एकता के अभाव का संदेश जनमानस में जाता। दूसरी ओर सांप्रदायिक आधार पर द्विराष्ट्र सिद्धांत के समर्थक देश की एकता को खतरा पेश कर रहे थे, जिनका नेतृत्व जिन्ना कर रहे थे। उनको संरक्षण देने का काम परोक्ष रूप से अंग्रेजी सरकार कर रही थी ताकि भारत को कमजोर करके किसी न किसी रूप में अपना प्रभुत्व बनाए रखा जा सके। खासकर सोवियत रूस के नजदीक अपनी सैनिक उपस्थिति भी उनका एक उद्देश्य था, जिसे कश्मीर समस्या के माध्यम से वे कुछ हद तक हल कर पाए। अंग्रेज और जिन्ना अपनी चाल में सफल भी हो गए, किन्तु हम

वहां भी गलती का शिकार हो गए। जब दो धर्मों के आधार पर देश बांट दिए गए तो बेहतर यही होता कि शांतिपूर्ण तरीके से गैर मुस्लिम भारत में आ जाते और मुसलमान पकिस्तान चले जाते। किन्तु हिंदू-मुस्लिम आबादियों का आदान-प्रदान भयंकर मारकाट में बदल गया। अंग्रेज सेना जानबूझ कर मूकदर्शक बनी रही। आबादियों का पूर्ण प्रत्यर्पण भी न हो सका और आज दिन तक आपसी टकरावों की समस्या से देश को जूझना पड़ रहा है। हालांकि भारतीय नेतृत्व का उस समय का फैसला मानवतावादी था किन्तु सांप्रदायिक अहंकार में उसके महत्व को समझने में भारतीय राष्ट्र असफल सिद्ध हो रहा है। वर्तमान में इस समस्या को ऐतिहासिक बोझ से बाहर निकल कर मानवतावाद से ही हल किया जा सकता है, जो दोतरफा ही होना चाहिए। मुसलमानों को भी यह समझना होगा कि हिंदू बहुल देश में आप अपनी धार्मिक मान्यताओं को मानने में पूर्णत: स्वतंत्र हैं, किन्तु आप भी हिंदू मान्यताओं के पालन में बाधक न बनें। यदि आप मूर्ति पूजा, भजन गाने, शंख, घंटे की आवाज और नाचने-गाने का बुरा मानने लगेंगे तो झगड़े कैसे रुकेंगे। हमें एक-दूसरे के त्योहारों में शामिल होने, मुबारक देने की संस्कृति विकसित करनी होगी। रहीम, रसखान, खुसरो सरीखे अनेक उदाहरण मौजूद हैं जिनसे मिलजुल कर रहना और एक दूसरे के विकास पर खुश होना सीखना होगा। गांधी जी की यह सोच बिल्कुल सही थी कि भारत को भारतीय तरीके से सरकार बनाने के तरीके नए हालात में खोजने होंगे। उन्होंने ग्राम स्वराज्य का दर्शन दिया, जिसे वर्तमान वैश्विक संदर्भों में परिभाषित और विकसित किए जाने की जरूरत थी। किन्तु हमने पूर्ण पाश्चात्य तरीके को अपनाया। पंचायत, जिसको शासन का बुनियादी स्तंभ होना था, उसे यूरोपियन स्थानीय स्वशासन की नकल बना कर छोड़ दिया। सौभाग्य से 73वें संविधान संशोधन से पंचायतों को संवैधानिक दर्जा दिया गया किन्तु अभी तक भी वे शासकीय दिशा निर्देशों की गुलाम ही हैं। क्योंकि वे जमीन से नहीं उगाई गईं, आरोपित की गई हैं। उन्हें अपने आत्मविश्वास को आधार बनाने में न जाने अभी कितना समय लगेगा। पाश्चात्य सोच में प्रशिक्षित राजनीतिक नेतृत्व और प्रशासन यह होने भी देगा या नहीं। धर्मनिरपेक्षता दूसरी बड़ी चुनौती है। भारत के संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सर्वधर्म समभाव ही हो सकता है। यहां धर्म मुक्त शासन संभव नहीं है। हालांकि बाबा साहब अंबेडकर ने धर्मनिरपेक्ष शब्द संविधान में नहीं रखा था जो बाद में इमरजेंसी में इंदिरा जी के समय में डाला गया।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, गुरुवार 17 अप्रैल 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
5

जैन संतों पर हमले के विरोध में 'कलेक्टोरेट चलो' रैली में शामिल हुए अरुण वोरा, बोले- संतों की सुरक्षा अब अनदेखी नहीं की जा सकती

दुर्ग (विश्व परिवार)। गवलियापारा स्थित वर्धमान स्थानक भवन से शुरू होकर दुर्ग कलेक्टोरेट तक निकली जैन समाज की 'कलेक्टोरेट चलो' रैली में आज कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व विधायक श्री अरुण वोरा ने भी भाग लिया। यह रैली झारखंड राज्य के ग्राम कछाला में जैन संतों के ऊपर हुए प्राणघातक हमले के विरोध में और संत समाज की सुरक्षा एवं धार्मिक स्वतंत्रता की मांग को लेकर आयोजित की गई थी।

इस रैली में जैन समाज के विभिन्न घटक बड़ी संख्या में एकजुट होकर शामिल हुए।इस जनआंदोलन के माध्यम से समाजजनों ने प्रशासन को ज्ञापन सौंपा, जिसमें दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की गई और यह आग्रह किया गया कि भविष्य में देशभर में संतों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए।

पूर्व विधायक अरुण वोरा ने रैली के दौरान कहा कि संत समाज पर हमला, सिर्फ एक समुदाय पर नहीं, बल्कि पूरे समाज और हमारे मूल्यों पर हमला है। हम सभी को एकजुट होकर इस अमानवीय कृत्य का विरोध करना होगा। यह न केवल धार्मिक स्वतंत्रता पर सवाल है, बल्कि हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी भी बनती है कि हर संत, हर नागरिक खुद को सुरक्षित महसूस करे। उन्होंने जैन समाज द्वारा शांतिपूर्ण और संगठित तरीके से उठाई गई आवाज़ की सराहना करते हुए कहा कि प्रशासन को इस मामले में पूरी संवेदनशीलता के साथ काम करना चाहिए। उन्होंने यह भी भरोसा दिलाया कि वे इस मुद्दे को उचित मंचों पर उठाएंगे और संतों की सुरक्षा को लेकर प्रशासनिक जवाबदेही की मांग करेंगे।

ज्ञात हो कि मध्य प्रदेशके कछाला गांव में जैन संतों पर हुए हमले ने पूरे देशभर के जैन समाज को आक्रोशित और व्यथित कर दिया है। इस आयोजन में दुर्ग के अनेक प्रमुख जैन अनुयायियों, सामाजिक संगठनों और युवाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। ज्ञापन सौंपते समय सभी ने एक स्वर में यह संदेश दिया कि जब तक संत समाज सुरक्षित नहीं होगा, तब तक उनका संघर्ष जारी रहेगा।

णमोकार तीर्थ प्रचार रथ 25 शहरों में घूमेगा, पालक मंत्री संजय शिरसाट ने किया लोकार्पण

छत्रपति संभाजीनगर (विश्व परिवार)। आचार्य देवनंदीजी गुरुदेव की प्रेरणा से नासिक जिले के मालसाने में निर्माणाधीन णमोकार तीर्थ का प्रचार रथ भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के निमित्त 25 शहरों में घूमेगा।

6 से 13 फरवरी 2026 को णमोकार तीर्थ का भव्य पंचकल्याणक महोत्सव होगा. इस कार्यक्रम की जानकारी जनसामान्य को हो इस उद्देश्य से प्रचार रथ बनाया गया है. प्रथम प्रचार रथ का उ?द्घाटन आचार्य देवनंदीजी गुरुदेव, आचार्य कुमुदनंदीजी गुरुदेव के सान्निध्य में णमोकार तीर्थ में हुआ. साथ ही छत्रपति संभाजीनगर में इसी प्रकार के रथ का लोकार्पण शहर के पालक मंत्री संजय शिरसाट ने किया. इस अवसर पर न्या कैलास चांदीवाल, पूर्व महापौर विकास जैन, आचार्य देवनंदीजी गुरुभक्त परिवार के णमोकार तीर्थ के न्यासी ललित पाटणी, रवि पहाड़े, विपिन कासलीवाल, देवेन्द्र काला महेंद्र ठोले, जीतेंद्र पहाड़े, प्रकाश ठोले, मानिकचंद गंगवाल डॉ आरसी बड़जाते, नरेंद्र अजमेरा, पीयूष कासलीवाल, छत्रपति संभाजीनगर में णमोकार तीर्थ प्रचार रथ का लोकार्पण करते हुए पालक मंत्री संजय शिरसाट. साथ हैं अन्य अतिथि. 2026 में पंचकल्याणक महोत्सव 6 से 13 फरवरी 2026 को पंचकल्याणक महोत्सव कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होगा. इस महोत्सव का प्रचार-प्रसार हो इसके लिए इस रथ का निर्माण किया गया है. प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा व पीयूष कासलीवाल ने बताया कि यह रथ छत्रपति संभाजीनगर के साथ नासिक, कोपरगांव, नांदगांव, मालेगांव, कन्नड़, सोलापुर, नांदेड़, कोल्हापुर, अकलूज, पुणे, औंढा, पैठण के साथ कई शहरों में एक ही समय घूमेगा।

जैन संतों पर हमले के विरोध में निकली बाइक रैली, महावीर चौक से उप-तहसील कार्यालय तक जताया विरोध, सौंपा गया राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। नीमच जिले के कछाला गांव में जैन संतों पर हुए प्राणघातक हमले के विरोध में बुधवार को नवापारा में सकल जैन समाज के बैनर तले विशाल बाइक रैली निकाली गई। रैली महावीर चौक से प्रारंभ होकर नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई उप-तहसील कार्यालय पहुँची, जहाँ महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा गया।

रैली में बड़ी संख्या में समाज के लोग शामिल हुए। हाथों में अहिंसा और सुरक्षा की मांग करने वाले बैनर लिए युवाओं ने शांतिपूर्वक विरोध दर्ज करवाया। रिखबचंद बोथरा, किशोर सिंघाई, अशोक गंगवाल, बबलू जैन सहित अनेक वरिष्ठजनों ने भी रैली में भाग लेकर एकजुटता दिखाई।कार्यकारी अध्यक्ष शिखर चंद बाफना ने बताया कि 13 अप्रैल की रात्रि को ज्ञानगच्छ संप्रदाय के तीन संत-श्री शैलेष मुनि जी, श्री मुनिन्द्र मुनि जी और श्री बलभद्र मुनि जी-पर विहार के दौरान असामाजिक तत्वों द्वारा हमला किया गया। उन्होंने कहा कि जैन संत जीवनभर अहिंसा, संयम और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हैं, ऐसे संतों पर हमला समूची मानवता पर हमला है।ज्ञापन के माध्यम से राष्ट्रपति महोदया से देशभर के जैन संतों को सुरक्षा मुहैया कराने, दोषियों पर सख्त कार्रवाई करने एवं भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ठोस कदम उठाने की माँग की गई है।ज्ञापन की प्रतिलिपियाँ प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्रियों एवं गृहमंत्रियों को भी भेजी गई।

समाज के समाज के वरिष्ठ सदस्यों ने शासन से मांग की की पूर्व में भी इसी प्रकार जैन संतों पर हमला हो चुका है इस पर उचित कार्यवाही कर कठोर सजा दी जाये ताकि दुबारा ऐसी घटना न हो।जैन समाज अहिंसा वादी है पर अपने साधु संतों पर हुए हमलों पर शांत बैठने वाली नहीं है हम सभी इसका घोर विरोध करते हैं एवं शासन से अनुरोध करते हैं कि इस कार्य को करने वाले लोगों की ऊपर कड़ी कार्रवाई की जाए।

अहिंसावादी समाज शासन से अपेक्षा रखती है कि हमारी मांगों पर ध्यान देकर कठोर दंडात्मक कार्यवाही हो एवं हमारे साधु संतों को उचित सुरक्षा मुहईया कराने की समुचित व्यवस्था कराई जाए। -**किशोर जैन**

छत्तीसगढ़ में समावेशी आजीविका योजना का शुभारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के जशपुर और कबीरधाम जिले के पांच विकासखण्डों में गरीबी उन्मूलन के लिए आज छत्तीसगढ़ समावेशी आजीविका योजना का शुभारंभ हुआ। नया रायपुर के होटल मेफेयर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय की मंशा और उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के मार्गदर्शन में शुरू की गई इस योजना के तहत जशपुर और कबीरधाम जिले के 5 विकासखंडों के 5000 अति गरीब परिवारों को अगले तीन वर्षों में प्रशिक्षण, विशेष कार्ययोजना और सरकारी योजनाओं के माध्यम से स्थायी आजीविका से जोड़ा जाएगा। इससे उनकी आय में वृद्धि के साथ सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान और बीआरएसी इंटरनेशनल के बीच तीन साल के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

विद्योपदेश नौ भागो में हुआ भव्य विमोचन

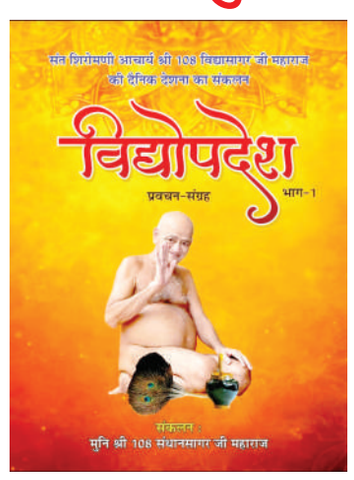

रायपुर (विश्व परिवार)। संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के प्रात: कालीन लघु लेकिन सार गर्भित प्रवचनों को संग्रह विद्योपदेश भाग 1 से 9 तक का भव्य विमोचन मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के रविन्द्र भवन में भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याण महोत्सव एवं परम पूज्य मुनि श्री 108 प्रमाण सागर जी महाराज के 38 वे दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर हुआ।

आचार्य भगवन के एक - एक वाक्य को अक्षरश: लिपीबद्ध करने वाले उन्हीं के परम प्रभावक शिष्य युवा तरूणाई के प्रखर वक्ता परम पूज्य मुनि श्री 108 संधान सागर जी महाराज की लेखनी ने यह महान कार्य सम्पन्न हुआ। परम पूज्य मुनि श्री गुरूदेव के साथ सात साल रहे और उन्होने प्रतिदिन की वाणी को इन भागों में सुन्दर - सुन्दर शीर्षक से तैयार किया। मुनि श्री का कहना है कि गुरूदेव की वाणी का संकलन कर हम अपने स्वयं कर ही कल्याण कर रहे है। गुरूवर की वाणी इह भव परभव की कल्याणी की उक्ति चारितार्थ करने वाले ये नौ भाग जन सामान्य के जीवन को बदलने वाले है।

परम पूज्य मुनि श्री जी ने 2018 से एक विद्यावाणी संकलन अभियान भी चलाया जिसमें पूज्य मुनि श्री जी ने गुरूदेव के दीक्षोपरांत के प्रवचनों को संग्रहित किया। प्रवचन कक्षायें, तत्व चर्चा आदि लगभग 20000 से अधिक घंटो की वाणी सुनने के लिए फिर से नया जन्म लेना होगा। गुरूदेव की वाणी 108 गुरूवाणी एप पर सहज सुलभ उपलब्ध है।

पूज्य मुनिवर के अथक प्रयास गुरूदेव की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने के है। ये नौ भाग उन्होने अपने शिक्षा गुरू के कर कमलों में भेंट कर अपने आपकों कृतार्थ किया। मुनि श्री 108 संधान सागर जी महाराज संकलित प्रवचन दैनिक विश्व परिवार ने भी प्रतिदिन पाठको को उपलब्ध कराकर गुरू चरणों की सेवा का अवसर प्राप्त किया। दैनिक विश्व परिवार एवं समस्त समाज ऐसे मुनिवर के चरणों में सदैव नतमस्तक रहेगा एवं उनके इस उपकार को कोई नहीं भूलेगा।

इन सभी पुस्तकों का विमोचन मुम्बई से पधारे श्रावक श्रेष्ठी दिनेश जी गंगवाल पद्म चद्र जी सोनी, गुणयतन परिवार से अनुभव सर्राफ, विकास गोधा डॉ सुभाष जरवारियां डॉ जितेन्द्र जैन आदि गणमान्य लोगों ने किया। इस पुस्तकों क सफल संपादन इन्दौर पंच बालयति के बा. ब्र. जिनेश भैया जी ने किया। संस्कार धाम मुम्बई के सौजन्य से मुम्बई के प्रभात जी शाह, दिनेश गंगवाल आदि परिवार आगे आकर इन प्रस्तकों का प्रकाशन करायेगें।

स्वस्तिभूषण माताजी ने कहा- सुखी रहने के लिए अपने मन पर संयम रखना चाहिए

माताजी नेमिनाथ वाटिका का किया अवलोकन एवं शीघ्र पूरा होने का दिया आशीर्वाद

केकड़ी (विश्व परिवार)। जिसने भी ध्यान को समझ लिया वह परमात्मा को भी समझ लेगा। शांति एवं परमात्मा के लिए ध्यानस्थ होना जरूरी है। जिनेंद्र देव की मुद्रा भी ध्यानस्थ होती है। शरीर में जान का रहना और मकान में शरीर का रहने से तथा परमात्मा को जानने के लिए ध्यान का बड़ा महत्व होता है। ज्ञान में ऊर्जा एवं सुख की शक्ति है मन के शांत रखने पर ही मन के द्वारा आराधना उपासना पूजा भक्ति आदि का आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

बोहरा कॉलोनी स्थित श्री नेमिनाथ दिगंबर जैन मंदिर के समीप शिवम वाटिका में स्वस्तिधाम प्रणेत्री गणिनिआर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ने अपने धर्मोपदेश में कहे। उन्होंने कहा कि लोभी, कामी, क्रोधी व्यक्ति कभी भी भक्ति नहीं कर सकता है, क्रोध में भगवान कभी भी नजर नहीं आते हैं, जिस पर आप क्रोध कर रहे होते हैं बस वही नजर आएगा। इसी प्रकार उन्होंने बताया कि मानव दूसरों के दुख को देखकर प्रसन्न होता है व दूसरों के सुख से दुखी रहता है। इसलिए सुखी रहने के लिए अपने मन पर संयम रखना चाहिए।

धार्मिक क्रियाओं के प्रति हमेशा भाव बनाकर कार्य करना चाहिए न जाने कब मन परिवर्तन हो जाए ओर कब जीवन की दिशा बदल जाये। श्री नेमीनाथ मंदिर में प्रात: जिनाभिषेक, शांति धारा एवं धार्मिक क्रियाएं आर्यिका ससंघ के सानिध्य में संपन्न हुई।प्रथम शांति धारा करने का सौभाग्य विमल कुमार चेतन प्रकाश, नीरज, आदित्य, मोहित, विजय, ऋषभ, सम्यकबिसुन्दनी परिवार को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में आचार्य श्री का चित्र अनावरण एवं चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन समाज के श्रेष्ठी जनों द्वारा किया गया।शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य सुनीता पाटनी, इंदु बाकलीवाल, राजकुमारी टोंग्या व आशा जैन ज्वैलर्स ने किया। पाद प्रक्षालन करने का पुण्यार्जन अमरचंद अशोक कुमार अनिल कुमार कुहाड़ा परिवार ने प्राप्त हुआ। एवं चंद्रकला जैन द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। आर्यिका माताजी ने बताया कि शीघ्र आदि व्याधि रोग से निवारण हेतु शिवम वाटिका में ध्यान योग प्राणायाम शिविर आयोजित किया जाएगा।

श्री नेमिनाथ वाटिका का अवलोकन- प्रात: 6 बजे आर्यिका ससंघ वाटिका अवलोकन हेतु वाटिका स्थल पर पहुँचा नेमिनाथ वाटिका निर्माण समिति के अध्यक्ष अशोक सिंघल, समाज के अध्यक्ष ज्ञान चंद जैन, मंत्री कैलाश जैन मावा वाले व कमेटी के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों ने माताजी के पाद प्रक्षालन किये। माताजी ने वाटिका निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण होने का आशीर्वाद दिया। धर्म सभा का संचालन कपिल भैया द्वारा किया गया। -**अभिषेक जैन लुहाड़िया**

आरंग में भाजपा का सक्रिय सदस्य सम्मेलन सम्पन्न, संगठन को सशक्त बनाने पर जोर

आरंग (विश्व परिवार)। सतनाम भवन, आरंग में विधानसभा स्तरीय भारतीय जनता पार्टी का सक्रिय सदस्य सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें भारी संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों और स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम पार्टी संगठन को और अधिक सशक्त करने तथा जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं से संवाद स्थापित करने हेतु आयोजित किया गया। इस विशेष अवसर पर आरंग विधायक एवं उपाध्यक्ष, अनुसूचित जाति विकास प्राधिकरण छत्तीसगढ़ शासन (कैबिनेट मंत्री दर्जा) गुरु खुशवंत साहेब मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने संबोधन में उन्होंने पार्टी की नीति, विचारधारा तथा आगामी योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं सभी कार्यकर्ताओं को संगठित होकर जनसेवा के कार्य में तत्पर रहने का आह्वान किया। सम्मेलन में भारतीय जनता पार्टी रायपुर ग्रामीण जिला अध्यक्ष श्री श्याम नारंग, छत्तीसगढ़ राज्य चर्म शिल्पकार आयोग के अध्यक्ष श्री ध्रुव कुमार मिर्धा, आरंग नगर पालिका अध्यक्ष डॉ. संदीप जैन सहित महिला मोर्चा, वरिष्ठ पदाधिकारीगण, सक्रिय सदस्य एवं समस्त कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यह सम्मेलन कार्यकर्ताओं के मनोबल को बढ़ाने एवं संगठन की मजबूती के लिए एक प्रेरणादायक पहल साबित हुआ।

जिस जाप से महोत्सव संपन्न होता है उससे आराधक की जिंदगी में आनंद आयेगा ही : मुनि श्रीसुधासागर जी

विश्व शांति महायज्ञ के साथ हुई बोहरी वंद प्रतिष्ठा, गहरा लाख मंत्रों के साथ समर्पित की इन्द्रों आहुतियां

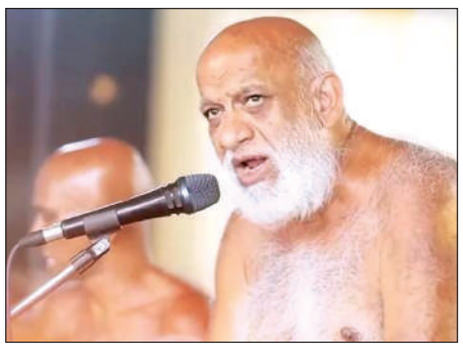

बोहरी वंद तीर्थ कटनी (विश्व परिवार)। श्री विद्यासागर दिगम्बर जैन चमत्कारोदय तीर्थ बोहरी वंद तीर्थ कटनी में परम पूज्य आध्यात्मिक संत निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज निर्यापक मुनि श्री प्रसाद सागर जी महाराज मुनिश्री पदम सागर जी महाराज मुनिश्री शीतल सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री वरिष्ठ सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री गम्भीर सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी महाराज ससंघ एवं प्रतिष्ठाचार्य प्रदीपभइया शुयाश के निर्देशन में चल रहे श्री मद् जिनेन्द्र पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव एवं विश्वशांति महायज्ञ का समापन गहरा लाख मंत्रों की आहूति समर्पित की गई

इस दौरान समारोह को संबोधित करते हुए मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने कहा कि प्रत्येक वस्तु अपने आप में एक एनर्जी रखती है चाहे चेतन हो या अचेतन। सबका अलग-अलग नेचर होता है, सारे निमित्त एक नेचर वाले नहीं होते। जैसे सभी पत्तियों का नेचर अलग अलग होता है, तुलसी की पत्ती अलग है, नीम का अलग। इसी प्रकार सभी पाषाण एक समान नहीं होते, कोई रत्न रूप होता है उसका नेचर अलग होता है, भारतवर्ष में जितने भी मूर्तियां है सभी का नेचर अलग अलग है। उनके नेचर के अनुसार ही ये तीर्थवन्दना व अनेक मंदिरों की स्थापना की जाती है। ये मूर्तियां मूक रहती हैं लेकिन इनके दर्शन करने से हमारे उस कार्य में एक शगुन का संकेत मिलता है, यही शुभोदय की मूर्ति में है। जिन लोगों को संदेह हो कि मेरा यह कार्य होगा या नहीं, वे एक बार शुभोदय तीर्थ बीनागंज में जाकर उनके सामने खड़े होकर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ लेना, वो नियम से संकेत देगा कि तुम सफल होगें।

मुनिश्री ने कहा कि जिस जाप से श्री मद् जिनेन्द्र पंच कल्याणक महा महोत्सव एवं विश्वशांति महायज्ञ इतना बड़ा कार्यक्रम संपन्न होता है तो फेरने वालों की जिंदगी के कितने कार्य सानंद सम्पन्न होंगे। आराध्य देव से परमार्थ संभलता है और इष्ट देव से संसार संभलता है। उन्होंने कहा कि धर्मध्यान सदा आलंबन रूप होता है और आलंबन में मात्र अभिप्राय का अंतर रहता है। जब व्यक्ति उसी आलंबन से आत्मा के स्वरूप का चिंतवन करता है और भगवान में भावी पर्याय दृष्टिगोचर करता है तो अंतरंग धर्मध्यान होता है और जब मात्र भगवान के गुणों का चिंतवन करता है, गुणों की प्रसंशा करता है, वह बहिरंग धर्मध्यान कहलाता है। अंतरंग धर्मध्यान कर्मों का क्षय करता है और बहिरंग धर्मध्यान पुण्य की श्रीवृद्धि करता है, जिससे संसार का वैभव मिलता है।

अभिषेक एवं शांतिधारा

विदिशा (विश्व परिवार)। शीतलधाम विदिशा में भगवान का अभिषेक एवं शांतिधारा एवं श्री शांतिनाथ महामंडल विधान श्रीमति शशी जैन की स्मृति में प्रवक्ता अविनाश जैन मनभावन परिवार ने संपन्न कराया।

कुशाभाऊ ठाकरे विश्वविद्यालय ने मनाया 21वां स्थापना दिवस मनाया गया

सच्चाई और ईमानदारी पत्रकारिता की आत्मा : दिलीप वासनीकर

रायपुर (विश्व परिवार)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय में बुधवार को 21वां स्थापना दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि दिलीप वासनीकर, सेवानिवृत्त आई.ए.एस. ने विश्वविद्यालय परिवार को स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि देशभर में चौथे स्तंभ की बुनियाद को मजबूत करने का कार्य कर रहा है। पत्रकारिता केवल खबरों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में जागरूकता और बदलाव लाने का सशक्त माध्यम है। सच्चाई और ईमानदारी ही पत्रकारिता की आत्मा है, जिसे हर विद्यार्थी को अपने कार्य का मूल मंत्र बनाना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति महादेव कावरे ने कहा कि माननीय कुलाधिपति एवं राज्यपाल श्री रमेन डेका एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व और मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में पत्रकारिता की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। पत्रकारिता के विद्यार्थियों को सच, संवेदनशीलता और नैतिकता के साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय नवाचार, शोध और शिक्षा के क्षेत्र में लगातार प्रगति कर रहा है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत यहां संचालित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के सतत विकास में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

इस अवसर पर कुलसचिव सुनील कुमार शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय गुणवत्ता और नवाचार की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहा है। आज के सूचना और तकनीक के युग में सही और प्रमाणिक खबरों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 17 अप्रैल 2025

संक्षिप्त समाचार

सुकन्या समृद्धि योजना : जन्म से 10 वर्ष की 2 बालिकाओं का खोल सकते हैं खाता

सारंगढ़-बिलाईगढ़(विश्व परिवार)। बालिकाओं के उज्जवल भविष्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा बैंक या डाकघर में वर्ष 2015 से सुकन्या समृद्धि योजना के तहत 10 वर्ष की आयु तक की बालिकाओं के खाते खोले जाने की योजना प्रारंभ है। सुकन्या समृद्धि योजना बालिकाओं के सुरक्षित भविष्य के उद्देश्य को प्राप्त करने का अभिन्न अंग है, जिसमें डाक विभाग बालिका अधिकारिता योजना का ध्वजवाहक है। सुकन्या समृद्धि योजना में एक बालिका के नाम पर केवल एक तथा एक पालक द्वारा अधिकतम दो कन्याओं के नाम पर खाते खोले जा सकते हैं। खाता बालिका के जन्म से 10 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक ही खोला जा सकता है। खाता खोलने के लिए बालिका का जन्म प्रमाण पत्र आवश्यक है किंतु उचित जन्म प्रमाण पत्र न होने की स्थिति में स्कूल के हेड मास्टर, गांव के मुखिया, अस्पताल जहां बच्ची का जन्म हुआ हो, के द्वारा जारी किया गया प्रमाण पत्र भी स्वीकार किया जाता है। यह खाता कम से कम 250 रु. की प्रारंभिक राशि से खोला जाता है तथा एक वित्तीय वर्ष में अधिकतम 150000 रु. तक की राशि जमा किया जा सकता है। चालू वित्तीय वर्ष 2024-25 में 8.2त्न ब्याज देय है। खाता खोलने की तारीख से 21 वर्ष पूर्ण होने पर ही खाता परिपक्व होगा। बालिका के 18 वर्ष की आयु के होने पर जमा राशि से आनुपातिक राशि का आहरण किया जा सकता है एवं विवाह तय होने पर 21 वर्ष की परिपक्वता के पूर्व भी खाता बंद कराया जा सकता है। डाक विभाग में ही इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक खाता खुलवा कर सुकन्या खाते से लिंक कर नेट बैंकिंग एवं राशि जमा किये जाने की सुविधा भी उपलब्ध है। यह खाता खोलने की सुविधा दुरस्त गाँव में संचालित शाखा डाकघरों में भी उपलब्ध है। जिले की बालिकाओं के भविष्य को उज्जवल बनाने एवं उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के मद्देनजर कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू ने सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले के महिला एवं बाल विकास विभाग के सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को आंगनबाड़ी केंद्र और प्राथमिक विद्यालयों में सुकन्या समृद्धि योजना का प्रचार- प्रसार कर पालकों को अपने बालिकाओं के लिए सुकन्या समृद्धि योजना का खाता खोलने के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए हैं, ताकि जिले की बालिकाओं के कल्याण के लिए सुकन्या समृद्धि योजना से अधिक से अधिक बालिकाएं इस योजना का लाभ उठा सकें। उल्लेखनीय है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में रायगढ़ डाक संभाग में अब तक 5500 से अधिक सुकन्या खाता खोला गया है जिसमे आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं का सहयोग अभूतपूर्व रहा है।

पुलिस ने नो पार्किंग में खड़े 86 वाहनों पर की कार्यवाही

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। आज दिनांक 15.04.2025 को पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन में अति0 पुलिस अधीक्षक मुकेश ठाकुर नक्सल ऑपरेशन एवं अति0 पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा के मार्गदर्शन में निरीक्षक अजय खेस, रक्षित निरीक्षक अरविंद साहू, निरीक्षक नवरतन कश्यप एवं यातायात टीम द्वारा शहर के महावीर चौक, जय स्तंभ चौक, मानव मंदिर चौक, सिनेमा लाईन, आजाद चौक, भारत माता चौक में बेतरतीब नो पार्किंग में खड़े 86 वाहनों पर कार्यवाही कर 42900/- जुर्माना वसूला गया। यह कार्यवाही लगातार जारी रहेगा। यातायात पुलिस की आम जन से अपील है कि अपने वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थल पर ही पार्किंग करें। यातायात व्यवस्था बनाये रखने यातायात पुलिस का सहयोग करें, यातायात नियमों का पालन करे एवं असुविधा से बचे।

जल जीवन मिशन के बढ़ते कदम, ग्राम फुण्डरी की महिलाओं की दिक्कतें हुई कम

ग्रामीण घरों में है नलों से शुद्ध जल, स्वास्थ्य और समृद्धि लाएगा आने वाला कल

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। जल जीवन मिशन भारत सरकार की अति महत्वपूर्ण योजना है। जिसका लक्ष्य सभी घरों तक कार्यशील घरेलू नल कनेक्शन उपलब्ध कराना है। इसमें जल संरक्षण, जल स्रोत स्थायित्व तथा वर्षा जल भण्डारण पर मुख्य रूप से ध्यान देते हुए ग्राम पंचायतों द्वारा विकेंद्रीकृत किंतु एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन के माध्यम से समुचित स्तर पर जल प्रबंधन को बढ़ावा दिया जाएगा। इसी उद्देश्य पूर्ति हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के जिला दंतेवाड़ा में भी प्रशासन द्वारा ''जल जीवन मिशन'' योजना को गांव के प्रत्येक घर के आंगन तक पहुंचाने हेतु प्रयत्नशील है। इस क्रम में जल जीवन मिशन अंतर्गत जिले में विकासखंड गीदम के ग्राम पंचायत फुण्डरी के एक बसाहट में भी खुशहाली आई है। जिला कार्यालय से 41 किमी दूर ग्राम पंचायत फुण्डरी घने जंगलों से घिरा हुआ पहाड़ी गांव है। इस ग्राम में कुल 06 बसाहट-रावतपारा, सन्नूपारा, ठोठापारा, पीदेपारा, स्कूलपारा, पटेलपारा है। इस गाँव में कुल घरों की संख्या 255 एवं कुल जनसंख्या 1408 है। इस प्रकार ग्राम पंचायत फुण्डरी में जल जीवन मिशन योजना को पहुंचाना चुनौतीपूर्ण कार्य था, चूंकि ग्राम में बसाहट व घर काफी दूर-दूर बसे होने के साथ ही यह घोर नक्सल प्रभावित क्षेत्र रहा है, जिसके कारण इस गांव तक बहुत सारी योजनाओं का क्रियान्वयन चुनौतीपूर्ण साबित हो रहा था। लेकिन प्रशासन की सक्रियता से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा ग्राम फुण्डरी में जल जीवन मिशन योजना अंतर्गत एकल ग्राम योजना कुल 8385 मीटर पाईप लाईन का विस्तार कर सभी घरों में घरेलू नल कनेक्शन लगाया गया, जिसमें कुल 02 सोलर 09 मीटर स्टेजिंग और 40 का उच्च स्तरीय जलागार का निर्माण किया जा रहा है। ग्राम के कुछ बसाहटों और शासकीय भवनों में में सोलर के माध्यम से आंशिक रूप से जल जीवन मिशन योजना को पहुंचाया गया, जिससे निरंतर स्वच्छ पीने का पानी प्राप्त हो रहा है। जल जीवन मिशन से न केवल स्वच्छ और शुद्ध पेयजल बल्कि अब ग्रामीण महिलाएं पानी की उपलब्धता को देखते हुए अपने अपने घरों में साग सब्जियों का उत्पादन कर अपनी आर्थिक आमदनी को बढ़ा रही है। इस क्रम में इसी ग्राम की महिला मत्तीबाई ने बताया कि इनका परिवार मुख्य रूप से खेती पर निर्भर है। घर के नजदीक पीने की पानी की व्यवस्था न होने के कारण उसे हमेशा घर से दूर उबड़-खाबड़ रास्ते से होकर हैण्डपम्प या नदी व चुंआ से पीने का पानी लाना पड़ता था। बारिश में बाढ़ आने पर यह रास्ता भी बंद हो जाता था। उसके ही समान अन्य महिलाओं के लिए भी इस प्रकार सुबह-शाम पानी लाना कष्टदायक था। लेकिन एक दिन ग्राम सभा में जल जीवन मिशन के तहत घर-घर में नल लगाए जाने की जानकारी दी गई। फिर देखते ही देखते लगभग एक साल में इनके पारा में हर घर के आँगन में जल जीवन मिशन का नल लगाया गया और इस प्रकार सोलर के माध्यम से साफपानी ग्राम के हर घरों में आने लगा। अब मत्तीबाई और सहित अन्य महिलाओं को पीने के पानी के लिए हैंडपंप या नदी नहीं जाना पड़ रहा है। सबसे सराहनीय पहल तो यह हुई कि महिलाएं अब भरपूर पानी उपलब्ध होने से अपने घर बाड़ियों में साग सब्जियां लगा रही है। स्वयं मत्तीबाई ने भी अपने घर के बाड़ी में मौसमी सब्जी जैसे टमाटर, बैंगन, मिर्ची, सेम लगाया और नजदीक के हाट बाजारों में उसका विक्रय कर अपने परिवार की आर्थिक आमदनी में सहयोग कर रही है। इसी कड़ी में महिलाएं कहती हैं कि घर में पीने के पानी मिलने से अब हमारे पास काफी समय बच जाता है और मौसमी सब्जी फसल तैयार होने में कम से कम दो महीने का समय लगता है तो अब हम स्व सहायता समूह का गठन करके आमदनी के लिए और भी काम शुरू करेंगे। इसी प्रकार अन्य महिला श्रीमती संगीता पुनेम का कहना है कि हर घर के आँगन में साफपानी मिलने से समय की बचत हुई है।

उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा पहुंचे ग्राम पंचायत हल्बा कचोरा के आश्रित ग्राम शासन कचोरा

आवास प्लस 2.0 विशेष पखवाड़ा के तहत हितग्राहियों के घरों का किया सर्वे

प्रदेश सरकार का संकल्प, हर पात्र व्यक्ति को मिलेगा शत-प्रतिशत आवास - उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा

बस्तर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने ग्राम पंचायत हल्बा कचोरा के आश्रित ग्राम शासन कचोरा में आवास प्लस 2.0 सर्वेक्षण विशेष पखवाड़ा के अंतर्गत सर्वे किया, जिसके तहत पात्र हितग्राहियों के घरों का सर्वेक्षण कर उन्हें आवास योजना से लाभान्वित किया जाएगा। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कई घरों का निरीक्षण किया और ग्रामीणों की समस्याएं भी सुनीं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि पात्र सभी व्यक्तियों को जल्द ही आवास की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा, अब सरकार ने आवास योजनाओं का दायरा बढ़ा दिया है। जो भी पात्र हैं, उन्हें शत-प्रतिशत आवास मिलेगा। ग्राम की हितग्राही दुलारी भारती, ब्रुदावती भारती और प्रतिमा बघेल ने उप मुख्यमंत्री का आत्मीय स्वागत किया। इस दौरान प्रतिमा बघेल के 7 वर्षीय पुत्र यूस बघेल ने मोबाइल से क्लिक कर सर्वे की प्रक्रिया पूरी की। हितग्राही प्रतिमा बघेल, पति गुड्डूराम बघेल, दुलारी भारती, पति भारत भारती और ब्रुदावती भारती, पति धनेश्वर भारती तीनों परिवार मजदूरी करके जीवन यापन करते हैं और वर्षों से अपने पक्के घर के सपने को साकार करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उप मुख्यमंत्री सर्वे कर अब अपने जल्द ही उनके सपनों के घर की उम्मीद और विश्वास दिलाया। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार जनता के साथ है और उनकी हर समस्या का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाएगा। इस अवसर पर स्थानीय प्रशासन के अधिकारी, जनप्रतिनिधि और ग्रामीणजन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मंत्री राजवाड़े ने बालोद में किया समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न संस्थानों का औचक निरीक्षण

बालोद(विश्व परिवार)। समाज कल्याण विभाग मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने आज अपने बालोद प्रवास के दौरान समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न संस्थानों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने संस्थानों के बेहतर संचालन हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने जिला मुख्यालय स्थित घरौंदा आश्रय गृह, प्रशामक देख-रेख गृह तथा एकीकृत नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र का निरीक्षण किया। श्रीमती राजवाड़े ने घरौदा आश्रय गृह में रसोई कक्ष, शयन कक्ष तथा बच्चों के मनोरंजन के लिए किए गए व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने आश्रय गृह के बच्चों से बातचीत कर उनका हालचाल भी जाना। इस दौरान उन्होंने बच्चों को फूलों का वितरण भी किया। इसी तरह जिला मुख्यालय स्थित प्रशामक देख-रेख गृह में वृद्धोजनों से भी उनका हालचाल जाना। उन्होंने प्रशामक गृह में वृद्धजनों के रहने के लिए की गई व्यवस्थाओं का अवलोकन भी किया। उन्होंने प्रशामक गृह के शयन कक्ष, रसोई कक्ष तथा वृद्धजनों के समय-समय पर स्वास्थ्य जाँच आदि के संबंध में भी जानकारी ली तथा बीमार वृद्धजनों के इलाज की शीघ्र व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश भी दिए। उन्होंने प्रशामक देख-रेख गृह के संचालनकर्ताओं को प्रशामक गृह के सुचारू संचालन की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। इस मौके पर समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने जिला मुख्यालय के वार्ड क्रमांक 20 स्थित एकीकृत नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र का भी निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने एकीकृत नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र में भर्ती लोगों से बातचीत कर उन्हें नशापान से दूर रहकर रचनात्मक कार्यों में अपनी भागीदारी निभाने को कहा। उन्होंने पुनर्वास केन्द्र में कर्मचारियों की उपस्थिति पंजी का अलवोकन किया। उन्होंने एकीकृत नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र में शयन कक्ष, रसोई कक्ष तथा अन्य केन्द्र के संचालन हेतु की गई व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया।

जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में हैंडपंपों की मरम्मत अभियान जारी

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। गर्मी के तेवर तेज होने के साथ ही जल समस्या इन दिनों विकराल रूप धारण करने लगी है। गर्मी के कारण जल स्तर लगातार घटता जा रहा है। गर्मियों में पेयजल संकट की समस्या के निदान के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयासरत है। बढ़ती गर्मी के बीच जिला प्रशासन द्वारा दूरस्थ ग्राम पंचायतों में हैंडपंप मरम्मत कार्य प्रारंभ किया गया है। इसके लिए प्रत्येक विकासखंड में हैंडपंप मरम्मत दल नियुक्त किया गया है। जो शिकायत प्राप्त होने पर मरम्मत करने मौके पर पहुंचेंगे। कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी के निर्देश पर लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के द्वारा गर्मी में पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जा रही है। मरम्मत दल प्रत्येक विकासखंड के हरेक पंचायत और गांव में जाकर खराब पड़े हैंडपंप की मरम्मत करने के साथ-साथ लोगों को जल जागरूकता के लिए भी प्रोत्साहित करेगा। इस क्रम में ग्राम मोफ्फनार, टेकनार, सुरनार, मुलेर, में मरम्मत दल द्वारा हैंडपंप संधारण किया गया।

योग से स्वस्थ्य भी होंगे, उपचार भी मिलेगा

जगदलपुर (विश्व परिवार)। भारतीय सिंधु सभा व पतंजलि योग समिति के तत्वाधान में 10 दिवसीय नि:शुल्क योग शिविर सिंधु भवन में होना हैं. इस योग शिविर में आसाध्य रोग व जटिल बीमारियों का घरेलू इलाज भी बताया जाएगा. सिंधु भवन में होने जा रहे नि:शुल्क योग शिविर के साथ प्रतिदिन जांच व उपचार भी किया जाएगा. इस कार्यक्रम संबंधित बैठक सिंधु भवन में आहूत की गई जहाँ आयोजन समिति गठित की गई जिसमे इस महत्वपूर्ण योग शिविर के संरक्षक उधाराम मूलचंदानी, गोवर्धन दास नवतानी, राजाराम नवतानी, कैलाश दंडवानी, पुष्पा मनवानी, चंद्रा देवी नवतानी अध्यक्ष मनीष मूलचंदानी उपाध्यक्ष दीपक वासवानी सचिव किशोर मनवानी, सहसचिव विजय बसंतवानी, कोषाध्यक्ष बृजलाल नागवानी स्वागत समिति संजय नात्थानी, विशाल दूल्हानी, डुला लछवानी, रविंद्र हेमनानी, प्रिया नवतानी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं देंगे. भारतीय सिंधु सभा अध्यक्ष मनीष मूलचंदानी ने जानकारी दी इस नि:शुल्क योग शिविर को पतंजलि योग समिति के योगगुरु डाक्टर मनोज पानीग्राही व सहयोगियों द्वारा संचालित होगा सिंधु भवन में एवं शिविर 10 दिवसीय होगा जो 21 अप्रेल से 30 अप्रेल तक योग शिविर होगा समय प्रात: 6 बजे से 7:30 बजे तक होगा. पतंजलि योगगुरु मनोज पानीग्राही ने बताया इस नि:शुल्क योग शिविर में महत्वपूर्ण योग के साथ साथ आसाध्य रोग व जटिल बीमारियों का उपचार भी किया जाएगा इस प्रकार का शिविर शहर का पहला नि:शुल्क योग शिविर होगा जहाँ प्रतिदिन रोग संबंधित जांच किया जाना, रक्तचाप, शुगर, थायराइड, मोटापा व वजन कम करना, शायनस, सर्दी खासी, बुखार, जोड़ो का दर्द, अनिद्रा व अन्य स्वास्थ्य संबंधित रोगों का मिट्टी पट्टी से उपचार करेंगे. जारी विज्ञप्ति में किशोर मनवानी ने बताया इस योग शिविर में 10 वर्ष से ऊपर के बच्चों को जरूर शामिल होना चाहिए क्योंकि शुरू से बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य संबंधित खानपान की जानकारी मिलेगी ताकि सदैव बच्चे तंदरुस्त रहे. इस विशेष योग शिविर में जिन्हे कुछ सालो से बीमारिया हैं वे तो जरूर योग शिविर में शामिल होने के लिए अपना पंजीयन के लिए 9826760114 नम्बर पर जानकारी देवे.

शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, तभी सार्थक : सांसद नाग

सांसद, विधायक हुए शामिल, अटल पंचायत डिजिटल पंचायत सुविधा केन्द्र के लिए हुआ एमओयू*

कांकेर(विश्व परिवार)। संविधान निर्माता भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में आज जिला पंचायत के सभाकक्ष में वर्चुअल माध्यम से सामाजिक समरसता दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से जनप्रतिनिधियों को संबोधित किया। उक्त कार्यक्रम में कांकेर सांसद श्री भोजराज नाग, विधायक कांकेर श्री आशाराम नेताम उपस्थित थे। जिला पंचायत के सभाकक्ष में आज दोपहर आयोजित वर्चुअल कार्यकम में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने संबोधित करते हुए कहा कि अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केन्द्र के लिए प्रत्येक विकासखण्ड से 10-10 ग्राम पंचायतों के सरपंच एवं सीएससी सर्विस प्रदाता के माध्यम से एमओयू की कार्यवाही की गई। साथ ही प्रधामंत्री आवास योजना का ज्यादातर लोगों को लाभान्वित करने आवास प्लस सर्वेक्षण कार्यक्रम के बारे में बताया। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने गांवों में भू-जल स्तर में वृद्धि करने के संबंध में जानकारी देकर वाटर हार्वेस्टिंग पर जोर दिया। कार्यक्रम में जिले से मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित सांसद श्री नाग ने संबोधित करते हुए कहा कि संविधान निर्माता बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा निर्मित संविधान आज भी प्रासंगिक है और सभी देशवासी उनके दिखाए मार्ग पर चलकर अपने जीवन की दशा और दिशा में सकारात्मक विकास कर रहे हैं। सांसद ने ग्राम पंचायतों की विभिन्न समस्याओं से अवगत होने के लिए अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केन्द्र की स्थापना हेतु मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने उपस्थित सभी विकासखण्डों के सरपंच, सीएससी कार्यकर्ता को अंतिम व्यक्ति तक शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित करने की अपील की। विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद कांकेर विधायक श्री नेताम ने अपने उद्बोधन में कहा कि राज्य सरकार द्वारा संचालित ''मोर दुवार साय सरकार'' के तहत आवास प्लस योजना के माध्यम से जिले के प्रत्येक पात्र हितग्राही को आवास दिया जाएगा। इसका लाभ लेने के लिए छूटे हुए हितग्राही अपना पंजीयन अवश्य कराएं। उन्होंने जल संरक्षण पर भी जोर देते हुए कहा कि सभी व्यक्तियों को जल और पर्यावरण बचाने हरसंभव प्रयास करना चाहिए, जिससे भविष्य सुरक्षित और संरक्षित रह सके। इस अवसर पर सांसद श्री नाग द्वारा संविधान की प्रस्तावना का वचन भी कराया गया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री निलेश कुमार महादेव क्षीरसागर, नगर पालिका कांकेर के अध्यक्ष श्री अरूण कौशिक, उपाध्यक्ष उत्तम यादव, जिला पंचायत सदस्य मृदुला भास्कर, महेश जैन, एसडीएम कांकेर श्री अरुण वर्मा सहित सरपंच, पंच एवं समाज प्रमुखजन उपस्थित थे।

व्यापार समाचार

अमेरिकन टेक फर्म यूएसटी ने भारत में किया विस्तार

बेंगलुरु(एजेंसी)। डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन सॉल्यूशंस उपलब्ध कराने वाली अमेरिकी कंपनी यूएसटी ने मंगलवार को कहा कि कंपनी ने बेंगलुरु में नया ऑफिस खोला है। यह शहर में कंपनी का चौथा ऑफिस है, जिसमें 300 लोगों के बैठने की क्षमता है। यूएसटी ने 2012 में बेंगलुरु में अपना परिचालन शुरू किया था और वर्तमान में यह शहर इसका दूसरा सबसे बड़ा ग्लोबल डिलीवरी सेंटर है, जिसमें 6,500 से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं, जो सेमीकंडक्टर, स्वास्थ्य सेवा, टेक्नोलॉजी, लॉजिस्टिक्स, हाई-टेक, रिटेल और बीएफएसआई में नए समाधान प्रदान करते हैं। बेंगलुरु के सेंटर हेड, किरणकुमार डोरस्वामी ने कहा, नई सुविधा का उद्घाटन भारत में यूएसटी के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। शहर के प्रमुख टेक हब में सैटेलाइट कार्यालयों के साथ, हमारा लक्ष्य अपने कर्मचारियों को उनके घरों के करीब सुविधाजनक कार्यस्थल प्रदान करना है, जिससे यात्रा की थकान कम हो और उन्हें इनोवेशन और उत्पादकता पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाया जा सके। उन्होंने आगे कहा, यह विस्तार हमारे ग्राहकों के लिए हाई-वैल्यू सॉल्यूशंस प्रदान करते हुए एक गतिशील और कर्मचारी-केंद्रित कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है। यूएसटी भारत भर में अपना विस्तार जारी रखे हुए है। साथ ही, डिजिटल परिवर्तन और टेक्नोलॉजी सेवाओं में वैश्विक अग्रणी के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत कर रहा है। मार्च 2025 में, यूएसटी ने पुणे में 1,000 सीटों की क्षमता वाले ऑफिस का उद्घाटन किया, जिसमें शहर में अगले पांच वर्षों में 6,000 नौकरियां पैदा करने की योजना है। कैलिफोर्निया स्थित मुख्यालय वाली यूएसटी ने कहा कि उसने देश भर में अपनी उपस्थिति का काफी विस्तार किया है। कंपनी के ऑफिस बेंगलुरु, तिरुवनंतपुरम, हैदराबाद, कोच्चि, पुणे, मुंबई, चेन्नई, कोयंबटूर, दिल्ली एनसीआर, अहमदाबाद, होसुर सहित प्रमुख स्थानों पर हैं और कंपनी देश भर में 20,000 से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करती है।

भारत में लॉन्च हुआ रेडमी A5 : पावर और इनोवेशन के साथ एंट्री-लेवल स्मार्टफ़ोन की नई परिभाषा

बैंगलोर: टेक्नोलॉजी और इनोवेशन में वैश्विक अग्रणी कंपनी शाओमी इंडिया ने आज रेडमी A5 के लॉन्च की घोषणा की, जो एंट्री-लेवल स्मार्टफ़ोन क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि है। 120 ॥5 हाई-रिफ्रेश-रेट डिस्प्ले, 32MP AI डुअल कैमरा सिस्टम और एक शानदार प्रोसेसर की विशेषता वाले, रेडमी A5 उन्नत सुविधाओं की तलाश करने वाले उपयोगकर्ताओं के लिए एक इमर्सिव और कुशल अनुभव प्रदान करता है। डिज़ाइन, विश्वसनीयता और उपयोग में आसानी पर ध्यान देने के साथ, यह डिवाइस बिना किसी समझौते के रोज़ाना स्मार्टफोन के उपयोग को बढ़ाता है। लॉन्च पर टिप्पणी करते हुए, शाओमी इंडिया के चीफ़ मार्केटिंग ऑफ़िसर अनुज शर्मा ने कहा, रेडमी ,5 एक एंट्री-लेवल स्मार्टफ़ोन से उपयोगकर्ता क्या उम्मीद कर सकते हैं, इसकी सीमाओं को आगे बढ़ाने की हमारी सतत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सेगमेंट के सबसे बड़े और सबसे स्मूद 120H5 डिस्प्ले के साथ, यह सेगमेंट में एक नया मानक स्थापित करते हुए, विज़ुअल फ्लुइडिटी का एक बेहतरीन स्तर प्रदान करता है। 32MP AI-पावर्ड कैमरा और पूरे दिन चलने वाली बैटरी के साथ, यह डिवाइस सुनिश्चित करता है कि उपयोगकर्ताओं को परफ़ॉर्मेंस या सुविधाओं से समझौता न करना पड़े। शाओमी में, हम उद्देश्य के साथ नवाचार करना जारी रखते हैं ङ्क उन लोगों के हाथों में शक्तिशाली, विश्वसनीय तकनीक लाना जो इस पर सबसे अधिक भरोसा करते हैं और सभी के लिए नवाचार प्रदान करते हैं।

होंडा मोटरसाइकिल ने लॉन्च किया नया Dio 125 'Dio Wanna Have Fun?'

गुरूग्राम: होंडा मोटरसाइकिल ने आज नया ओबीडी2बी अनुपालक Dio 125 लॉन्च किया। Dio 125 आकर्षक डिज़ाइन और एडवांस्ड फीचर्स से सुसज्जित है और इस नए स्कूटर की शुरुआती कीमत पुणे में RS. 96,749 रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होती है। कंपनी ने ग्राहकों पर सबसे अधिक ध्यान देते हुए नए- नए प्रोडक्ट्स लाने की अपनी परंपरा को जारी रखा है। ओबीडी2बी Dio 125 के लॉन्च के बारे में कंपनी के प्रबंध निदेशक, प्रेसिडेंट और सीईओ, श्री त्सुत्सुमु ओटानी ने कहा, ''पिछले 21 सालों से Dio भारत में एक आइकॉनिक नाम रहा है, जो स्टाइल, परफॉर्मेंस और भरोसे का प्रतीक है। यह हमेशा ट्रेंडी और भरोसेमंद स्कूटर चाहने वालों की पहली पसंद है। नए ओबीडी2बी Dio 125 के लॉन्च के साथ, हम इसकी मशहूर विरासत को और आगे ले जा रहे हैं, जिसमें मोटो-स्कूटर का मूल आकर्षण बरकरार है और ग्राहकों के लिए नए फीचर्स और रोमांच को जोड़ा गया है।'' इस लॉन्च पर अपनी बात रखते हुए, श्री योगेश माथुर, डायरेक्टर - सेल्स और मार्केटिंग, होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने कहा, ''हमें नया ओबीडी2बी Dio 125 पेश करते हुए बहुत खुशी हो रही है, जो सालों से युवा भारत का पसंदीदा स्कूटर रहा है। नए ग्राफिक्स, आधुनिक टीएफ्टी डिस्प्ले और बेहतर कनेक्टिविटी फीचर्स के साथ, यह स्कूटर आज के ग्राहकों की बदलती जरूरतों को पूरा करेगा।

ईपीएफओ ने बदले ये तीन बड़े नियम, करोड़ों लोगों पर असर

नई दिल्ली(एजेंसी)। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने अपने करोड़ों सदस्यों के लिए नियमों में कई अहम बदलाव किए हैं। इन बदलावों का सीधा असर पीएफ खाताधारकों पर पड़ेगा, जिससे वेरिफिकेशन और पीएफ क्लेम जैसी प्रक्रियाएं पहले से ज्यादा आसान हो जाएंगी। आइए जानते हैं इन तीन प्रमुख बदलावों के बारे में- अब ईपीएफओ सदस्य फेस वेरिफिकेशन यानी चेहरे के सत्यापन के माध्यम से अपना यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (ह) प्राप्त कर सकते हैं और उससे जुड़ी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। केंद्रीय श्रम मंत्रालय ने हाल ही में फेस वेरिफिकेशन के जरिए ह आवंटित करने और उसे सक्रिय करने के लिए अपग्रेडेड डिजिटल सेवाएं शुरू की हैं।

केस इंडिया ने रायपुर में नई डीलरशिप के साथ वितरण पहुंच का विस्तार किया

रायपुर (विश्व परिवार)। सीएनएच के ब्रांड केस कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट ने रायपुर, छत्तीसगढ़ में एक नई एकीकृत डीलरशिप के उद्घाटन के साथ ग्राहक केंद्रित समाधानों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत किया है। एरियल धनलक्ष्मी मशीनरी इंडिया द्वारा संचालित यह आधुनिक 3एस सुविधा एक ही छत के नीचे बिक्री, सेवा और स्पेयर पार्ट्स प्रदान करती है।

इस अवसर पर कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट सेगमेंट, नेटवर्क विकास एशिया प्रशांत प्रमुख, श्री कार्लो ओलिवा ने कहा, एक वैश्विक ब्रांड के रूप में, केस एक भविष्य तैयार नेटवर्क बनाने पर केंद्रित है जो टिकाऊ विकास का समर्थन करता है और हमारे द्वारा संचालित प्रत्येक बाजार में उत्कृष्टता प्रदान करता है। नई डीलरशिप सिर्फ विस्तार नहीं है, यह वैश्विक क्षमताओं को स्थानीय विशेषज्ञता के साथ एकीकृत करने के हमारे दीर्घकालिक दृष्टिकोण को दर्शाती है। मध्य भारत में अपनी उपस्थिति को मजबूत करके, हमारा लक्ष्य ग्राहकों को अत्याधुनिक तकनीक, विश्वसनीय सहायता और हमारी अंतरराष्ट्रीय सेवा मानकों तक निर्बाध पहुँच प्रदान करना है।

लॉन्च के अवसर पर केस कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट, भारत और सार्क के प्रबंध निदेशक श्री शलभ चतुर्वेदी ने कहा, रायपुर डीलरशिप केस द्वारा भारत के सबसे तेजी से बढ़ते औद्योगिक और वाणिज्यिक समूहों में से एक में प्रवेश करने के लिए एक रणनीतिक कदम है, एक ऐसा क्षेत्र जो देश की बुनियादी ढांचे की विकास कहानी से मजबूती से जुड़ा हुआ है। शहर के सड़क, खनन, रियल एस्टेट और उद्योग जैसे क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए एक केंद्र के रूप में उभरने के साथ, उच्च प्रदर्शन वाले निर्माण उपकरणों की निरंतर मांग है। यह सुविधा हमारे सर्वश्रेष्ठ उत्पादों और सेवा सहायता को हमारे ग्राहकों के करीब लाती है, जिससे तेजी से प्रतिक्रिया, बेहतर पहुंच और क्षेत्रीय और राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं के साथ गहरा तालमेल संभव होता है।

नई सुविधा में एक पूरी तरह से सुसज्जित कार्यशाला है, जिसमें उच्च प्रशिक्षित सेवा इंजीनियर और तकनीकी सलाहकार काम करते हैं। यह न केवल रायपुर में बल्कि बस्तर, महासमुंद और राजनांदगांव सहित पड़ोसी जिलों में भी त्वरित और कुशल सहायता प्रदान करने के लिए अच्छी तरह से तैयार है। ग्राहकों को लचीले वित्तपोषण विकल्पों, आकर्षक विनिमय कार्यक्रमों और समर्पित रखरखाव और अपटाइम सहायता का भी लाभ मिलेगा।

डीलरशिप में केस के सभी उत्पाद पोर्टफोलियो उपलब्ध होंगे, जिसमें बैकहो लोडर, वाइब्रेटरी कॉम्पैक्टर, एक्सकेवेटर, स्किड स्टीयर लोडर, मोटर ग्रेडर और डोजर शामिल हैं। अनुभवी नेतृत्व और स्थानीय परिचालन स्थितियों की गहरी जानकारी के साथ, यह नई सुविधा पूरे क्षेत्र में ठेकेदारों और ऑपरेटरों की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार है।

केस 1989 से भारत में मौजूद है और वाइब्रेटरी कॉम्पैक्टर और बैकहो लोडर सेगमेंट में अपने नेतृत्व के लिए जानी जाती है। मध्य प्रदेश के पीथमपुर में उन्नत सुविधा में निर्मित इसकी मशीनें दुनिया भर के 100 से अधिक देशों में निर्यात की जाती हैं।

पाकिस्तान के साहिबजादा फरहान ने रचा इतिहास कोहली और गेल के वर्ल्ड रिकॉर्ड की बराबरी की

रावलपिंडी(एजेंसी)। पाकिस्तान के दाएं हाथ के धाकड़ बल्लेबाज साहिबजादा फरहान ने सोमवार को रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में इस्लामाबाद यूनाइटेड और पेशावर जाल्मी के बीच पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) के मैच के दौरान इतिहास रच दिया. वह सनसनीखेज शतक के साथ विराट कोहली और क्रिस गेल जैसे खेल के शीर्ष खिलाड़ियों की लिस्ट में शामिल हो गए. फरहान ने हाल ही में संपन्न नेशनल टी20 कप की अपने शानदार फॉर्म को जारी रखा, जहां उन्होंने 3 शतक बनाए थे. 29 वर्षीय फरहान ने साल का अपना चौथा टी20 शतक जड़ा, उन्होंने सिर्फ 52 गेंदों पर 106 रन बनाए और यूनाइटेड को 243 रनों का विशाल स्कोर बनाने में मदद की, जो पीएसएल के इतिहास में संयुक्त

रूप से छठा सबसे बड़ा स्कोर है. इस शतकीय पारी के साथ ही फरहान ने रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराया और एक साल में 4 टी20 शतक लगाने वाले इतिहास के केवल पांचवें खिलाड़ी बन गए. 29 वर्षीय फरहान ने अब तक 9 टी20 मैच खेले हैं और क्रिस गेल, विराट कोहली, जोस बटलर और शुभमन गिल जैसे खिलाड़ियों के साथ यह रिकॉर्ड शेयर किया है. इसके अलावा, वह ऐसा करने वाले पहले पाकिस्तानी बल्लेबाज बन गए हैं, जिन्होंने एक साल में 3 शतक लगाने के बाबर के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है. बाबर आजम ने 2019 और 2023 में 3-3 शतक लगाए हैं. गौरतलब है कि गेल ने अपने करियर में 3 बार एक साल में 3 शतक लगाए हैं. पिछले महीने फरहान ने टी20 नॉकआउट मैच में गेल के सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर के रिकॉर्ड को तोड़ दिया. दाएं हाथ के बल्लेबाज ने सेमीफाइनल में पेशावर क्षेत्र के लिए एबटाबाद क्षेत्र के खिलाफ खेलते हुए 72 गेंदों पर 148 रनों की पारी खेली. वेस्टइंडीज के पूर्व बल्लेबाज ने इससे पहले मीरपुर में 2017 बांग्लादेश प्रीमियर लीग के फाइनल में ढाका डायनामाइट्स के खिलाफ रंगपुर राइडर्स के लिए 146 रन की पारी खेलकर रिकॉर्ड बनाया

चेन्नई ने रोमांचक मुकाबले में लखनऊ को 5 विकेट से हराया, धोनी ने खेली मैच जिताऊ पारी

लखनऊ (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का 30 वां मैच इकाना क्रिकेट स्टेडियम में लखनऊ और चिन्नई के बीच खेला गया. जिसमें धोनी की टीम ने ऋषभ पंत की टीम को 5 विकेट से हराकर इस सीजन में अपनी दूसरी जीत दर्ज की है. चिन्नई के लिए यह जीत काफी अहम थी क्योंकि 5 मैच लगातार हारने के बाद उन्हें ये जीत नसीब हुई है. 167 रनों के लक्ष्य को सीएसके के लिए मुश्किल नजर आरहा था लेकिन आखिर में धोनी की 11 गेंदों में 26 रनों की तेज तर्रार पारी और शिवम दुबे की 37 गेदों में 43 रनों की झुझारू पारी ने मैच को चिन्नई की

झोली में डाल दिया. सीएसके की 7 मैचों में ये दूसरी जीत है जबकि लखनऊ की 7 मैचों में ये तीसरी हार है. धोनी और दूबे के अलावा आईपीएल में अपना पहला मैच खेलने वाले शैख रशीद और राचिन रवींद्र ने अच्छी बल्लेबाजी की. रशीद ने 19 गेंद में 27 जबकि रचिन 22 गेंद में 37 रनों की पारी खेली. इससे पहले शाम को, सीएसके के गेंदबाजों ने नियंत्रित प्रदर्शन के साथ जीत की नींव रखी. खलील अहमद ने पहले ओवर में एडेन मार्करम को आउट करके शानदार शुरुआत दी, जिसका श्रेय राहुल त्रिपाठी को जाता है.

सैमसंग इंडिया ने एआई-पावर्ड रिमोट डायग्नोंस्टिक एवं ट्रबलशूटिंग टूल के साथ कस्ट्मर सर्विस को बेहतर बनाया

गुरुग्राम: भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने एक नई सुविधा शुरू की है - होम अप्लायंसेज रिमोट मैनेजमेंट (HRM) टूल। यह एक स्मार्ट तकनीक है जो आपके घर के सैमसंग उपकरणों की परेशानी को दूर बैठे पहचानने और ठीक करने में मदद करती है। इससे सर्विस का इंतजार कम होता है और ग्राहकों को तेज़ और बेहतर सुविधा मिलती है। अब सैमसंग के टेक्नीशियन एआई यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से प्रॉब्लम को जल्दी समझकर हल कर सकते हैं। इससे ज़रूरी नहीं कि हर बार टेक्नीशियन आपके घर आए। यह नई तकनीक तेज़ समाधान देती है, जिससे ग्राहकों को कम परेशानी होती है और उन्हें बेहतर अनुभव मिलता है। सैमसंग की यह सुविधा कस्टमर सर्विस का तरीका बदल रही है और स्मार्ट होम डिवाइसेज़ से जुड़ाव को और आसान बना रही है। सुनील कुटिन्हा, वाइस प्रेसिडेंट, कस्टमर सैटिस्फैक्शन, सैमसंग इंडिया ने कहा, सैमसंग सर्विस घरेलू उपकरणों की समस्याएं पहचानने में सबसे आगे है। हमारी स्मार्ट डायग्नोस्टिक्स सर्विस से ग्राहकों की दिक्कतें जल्दी हल हो जाती हैं और ज़्यादातर मामलों में टेक्नीशियन को घर बुलाने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। यह तकनीक न सिर्फसमय बचाती है, बल्कि तेज़ समाधान देती है और आपके डिवाइस की सही देखभाल कैसे करें, इसकी भी पूरी जानकारी देती है - जिससे ग्राहकों को एक आसान और बेहतर अनुभव मिलता है। एचआरएम (होम अप्लायंसेज रिमोट मैनेजमेंट) सैमसंग के स्मार्ट उपकरणों के लिए स्मार्टथिंग्स ऐप पर तुरंत समाधान देता है। यह ऐप ग्राहकों को अपने उपकरण चलाने और समझने में मदद करता है। इस तकनीक से सैमसंग के स्मार्ट उपकरणों की देखभाल आसान और बिना झंझट वाली हो गई है।

एचडीएफसी बैंक परिवर्तन ने ग्रामीण विकास पहल के तहत 298 सीमावर्ती गांवों को कवर किया

मुंबई: भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक ने अपनी सीएसआर शाखा परिवर्तन के तहत देश भर में 298 सीमावर्ती गांवों को अपने ग्रामीण विकास पहल के तहत कवर किया है। गांवों के ये समूह असम, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, राजस्थान, सिक्किम, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं। बैंक की योजना आने वाले वर्षों में 150 अतिरिक्त सीमावर्ती गांवों तक अपनी पहुंच बढ़ाने की है। ये पहल केंद्र के बॉर्डर एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम और वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम में उल्लिखित राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित हैं। उत्तरी और पूर्वोत्तर हिमालयी क्षेत्रों और पश्चिमी रेगिस्तानी इलाकों के साथ सीमावर्ती क्षेत्र के गाँव अक्सर कठिन भूभाग, आवश्यक सेवाओं तक सीमित पहुँच और अपने दूरस्थ स्थानों के कारण आर्थिक कमज़ोरियों सहित अनूठी चुनौतियों से जूझते हैं। परिवर्तन ने लक्षित आवश्यकता-आधारित हस्तक्षेपों के माध्यम से इन क्षेत्रों में लगभग पाँच लाख व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित किया है।

बैंक इन क्षेत्रों में दो प्रमुख प्रकार की परियोजनाओं को लागू करता है:

1) हॉलिस्टिक रूरल एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम (एचआरडीपी): यह दृष्टिकोण 36-48 महीनों की अवधि में 15-20 सन्निहित गांवों के समूहों पर केंद्रित है। यह ग्रामीण विकास, शिक्षा, कौशल विकास, वित्तीय समावेशन, स्वास्थ्य और स्वच्छता और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन सहित कई पहलुओं को एकीकृत करता है।

2) फोकस्ड डेवलपमेंट प्रोग्राम (एफडीपी): यह पहल हस्तक्षेप के विशिष्ट क्षेत्रों को लक्षित करती है, एक क्षेत्र में केंद्रित प्रभाव प्राप्त करती है।

एचडीएफसी बैंक की परिवर्तन पहल अरुणाचल प्रदेश में लोअर दिबांग घाटी और शि योमी; असम में बक्सा और उदलगुरी; बिहार में किशनगंज, पश्चिम चंपारण और मधुबनी राजस्थान में बाड़मेर; सिक्किम में ग्यालशिंग पश्चिम और पाकयोंग; उत्तर प्रदेश में पीलीभीत; और उत्तराखंड में चमोली जैसे सीमावर्ती क्षेत्रों में ग्रामीण समुदायों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस पहल के बारे में बोलते हुए, एचडीएफसी बैंक के डीएमडी श्री कैजाद भरूचा ने कहा, 卐हम प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षा, बेहतर कृषि उत्पादकता, नवीकरणीय ऊर्जा और आजीविका के अवसरों तक पहुँच प्रदान करके भारत के सीमावर्ती गाँवों में सार्थक प्रभाव पैदा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के साथ तालमेल बिठाकर, हम स्थानीय समुदायों, गैर सरकारी संगठनों और सरकारी निकायों के साथ मिलकर मजबूत, आत्मनिर्भर और जीवंत समुदाय बनाने के लिए सहयोग करते हैं जो भारत के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने में योगदान करते हैं।

कार्यालय अधीक्षण अभियंता,
लोक निर्माण विभाग, रायपुर मण्डल क्रमांक 1 (छत्तीसगढ़)

निविदा सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है :-

एन.आई.टी. क्र./सिस्टम टेन्डर नं	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत रू (लाख में)
1	2	3
17/166641	DISMANTLING OF (BUILDING & DRAIN & UTILITY SHIFTING) RE-CONSTRUCTION WORK OF SHUKRAVARI BAZAR TO PLAT FARM NO.-5 RAILWAY FATAK. (RHS) UNDER MAINTENANCE SUB- DIVISION RAIPUR (C.G.) (प्रथम आमंत्रण)	रू. 41.25 लाख
16/166642	ADDITIONAL WORK TILES, PAVERS, TEXTURE PAINT IN TENNIS SPORTS ACADEMY AT RAIPUR UNDER MAINTENANCE SUB-DIVISION, RAIPUR (C.G.) (प्रथम आमंत्रण)	रू. 53.15 लाख
15/166643	BOUNDARYWALL WITH GATE, TOILET BLOCK MAIL & FEMALE, FIRE FIGHTING, WATER HARWESTING & OTHER MISCELLANEOUS WORK OF TENNIS SPORTS ACADEMY AT LABHANDI RAIPUR (CG) (प्रथम आमंत्रण)	रू. 152.57 लाख
226/167028	DISMANTLING OF (BUILDING & DRAIN & UTILITY SHIFTING) RE-CONSTRUCTION WORK OF SHUKRAVARI BAZAR TO PLAT FARM NO.-5 RAILWAY FATAK. (LHS) UNDER MAINTENANCE SUB-DIVISION RAIPUR (CG.) (द्वितीय आमंत्रण)	रू. 40.14 लाख

एन.आई.टी. क्र.17 सिस्टम टेन्डर नं. 166641, एन.आई.टी. क्र. 16 सिस्टम टेन्डर नं. 166642 एवं एन.आई.टी. क्र. 15 सिस्टम टेन्डर नं. 166643 निविदा डाउनलोड़ करने की अंतिम तिथि दिनांक 01.05.2025 समय सायं 5:30 बजे तक एवं एन.आई.टी. क्र. 226 सिस्टम टेन्डर नं. 167028 निविदा डाउनलोड़ करने की अंतिम तिथि दिनांक 25.04.2025 समय सायं 5:30 बजे तक

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी **https://eproc.cgstate.gov.in** पर देखी जा सकती है एवं डाउनलोड की जा सकती है।

अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग,
रायपुर मण्डल क्र.-1, रायपुर (छ.ग.)

G-252600282/3

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 17 अप्रैल 2025

एनयूएचएम अंतर्गत उन्मुखीकरण कार्यशाला 17 अप्रैल को सुबह 10 बजे से

रायपुर (विसं)। राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (एनयूएचएम) के अंतर्गत नगर पालिक निगम रायपुर क्षेत्र अंतर्गत राष्ट्रीय और राजकीय कार्यक्रमों के संगठित संचालन और सुदृढीकरण और जनभागीदारी प्राप्त करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा दिनांक 17 अप्रैल 2025 गुरुवार को सुबह 10 बजे से राजधानी शहर रायपुर के होटल बेबीलान केपिटल में नगर पालिक निगम रायपुर की महापौर श्रीमती मीनल चौबे की अध्यक्षता में सभी जनप्रतिनिधि वार्ड पार्षदगणों, स्वास्थ्य अधिकारियों, जोन कमिश्नरों की एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन रखा गया है.

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्य नियुक्त

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल एवं कुलाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग रमेन डेका द्वारा प्रोफेसर विजय कुमार गोयल, रिटायर्ड प्रिंसिपल संत गोविंदराम शदाणी शासकीय कला एवं वाणिज्य महिला महाविद्यालय, देवेन्द्र नगर को छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग का अध्यक्ष एवं डॉ. व्यास दुबे, सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (सांख्यिकी अध्ययन शाला) को पूर्णकालिक सदस्य (अकादमिक) नियुक्त किया गया है। ये नियुक्ति छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग अधिनियम 2005 की धारा 36 की उपधारा (4) एवं (5) में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए की गई है। इस आशय का आदेश 15 अप्रैल को राजभवन सचिवालय से जारी किया गया।

फ्लैट्स आवंटन के बाद एक भी किस्त जमा नहीं की, कौशल्या माता विहार के फ्लैट्स 7 दिन बाद होंगे निरस्त

रायपुर (विश्व परिवार)। कौशल्या माता विहार योजना (कमल विहार) में लगभग एक साल पहले से आवंटित फ्लैट्स की एक भी किस्त जमा नहीं करने वाले आवंटितियों के फ्लैट्स आगामी 7 दिनों के बाद निरस्त कर दिए जाएंगे। रायपुर विकास प्राधिकरण व्दारा फोन, एसएमएस तथा डाक से सूचना देने के बाद भी आवंटितियों व्दारा पहली किस्त की राशि जमा नहीं की है। प्राधिकरण ने आवंटितियों को 7 कार्य दिवस अर्थात 28 अप्रैल 2025 तक संपूर्ण बकाया राशि जमा करने के लिए अंतिम सूचना जारी कर दी है। इसके बाद जिनकी राशि जमा नहीं होगी उन सभी फ्लैट्स का आवटन रद्द कर उसे पुन: विज्ञापन के माध्यम से विक्रय किया जाएगा। प्राधिकरण प्रशासन का यह भी मानना है कि ऐसे कई आवंटितियों ने एजेन्टों के माध्यम से पूंजी निवेश हेतु आवंटन कराया है। फलस्वरुप जिन्हें सही मायनें में जिन्हें आवास की जरूरत है उन्हें फ्लैट्स नहीं मिल पा रहा है।

कुगदा गेट रेलवे समपार फाटक पर मरम्मत के लिये सड़क यातायात बंद रहेगा

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर रेल मंडल कुम्हारी- सी/केबिन के मध्य समपार फाटक क्रमांक 430(कि.मी.842/7- 9) रेल पथ में अप लाइन में दिनांक 17.04.2025 को सुबह 08:00 बजे से दिनांक 22.04.2025 सुबह 08:00 बजे तक सड़क यातायात का आवागमन बंद रहेगा। आवश्यक मरम्मत कार्य के कारण समपार फाटक से वाहनों का आवागमन बंद रहेगा। समपार फाटक की मरम्मत करना रेल यातायात व यात्रियों की संरक्षा की दृष्टि से अति आवश्यक हैं।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा पहुंचे ग्राम पंचायत हल्बा कचोरा के आश्रित ग्राम शासन कचोरा

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने ग्राम पंचायत हल्बा कचोरा के आश्रित ग्राम शासन कचोरा में आवास प्लस 2.0 सर्वेक्षण विशेष पखवाड़ा के अंतर्गत सर्वे किया, जिसके तहत पात्र हितग्राहियों के घरों का सर्वेक्षण कर उन्हें आवास योजना से लाभान्वित किया जाएगा। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कई घरों का निरीक्षण किया और ग्रामीणों की समस्याएं भी सुनीं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि पात्र सभी व्यक्तियों को जल्द ही आवास की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा, अब सरकार ने आवास योजनाओं का दायरा बढ़ा दिया है। जो भी पात्र हैं, उन्हें शत-प्रतिशत आवास मिलेगा।

अरिहंत कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड के रायपुर कार्यालय का शुभारंभ, लोगों को दिलाएंगे निवेश के बेहतर अवसर

रायपुर (विश्व परिवार)। देवेंद्र नगर स्थित करसन चैम्बर्स में (आफिस सं. 117- प्रथम तल पर) अरिहंत कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड के छत्तीसगढ़ राज्य कार्यालय का उद्घाटन आज पूजन विधान के साथ संपन्न हुआ।

कार्यालय का उद्घाटन श्री प्रदीप जैन, अध्यक्ष, श्री दिगंबर जैन महा समिति छत्तीसगढ़ संपादक दैनिक विश्व परिवार एवं श्री प्रद्यमन रावका पूर्व अध्यक्ष खंडेलवाल महासभा द्वारा फीता काटकर किया गया।

उल्लेखनीय की इस कंपनी द्वारा स्टॉक मार्केट, पीएनएस, एमआर टीआरडी मर्चेंट बैंकिंग आदि में निवेश संबंधी सुविधा प्रदान की जाती है। यह इस कंपनी का कॉरपोरेट ऑफिस मुंबई में तथा पंजीकृत कार्यालय इंदौर में स्थापित है। कंपनी के अध्यक्ष श्री अशोक जैन संयुक्त निदेशक श्री अर्पित जैन है। वर्टिकल है श्री अकलंक जैन एवं रायपुर ब्रांच के मुख्य श्री दीपांशु गुप्ता है।

इस ब्रांच के उद्घाटन के अवसर पर श्री अकलंक जैन ने बताया कि अरिहंत कैपिटल अपने आप में देश की एक विश्वसनीय कंपनी है जिसने लोगों को निवेश के द्वारा लाभ पहुंचाने के कार्य में महारथ हासिल किया है। कंपनी द्वारा निरंतर विस्तार कर अपनी सेवाओं के द्वारा लोगों को लाभान्वित करने के संकल्प के साथ इस ब्रांच का शुभारंभ किया गया है। आपने बताया कि भविष्य में विभिन्न गतिविधियो के द्वारा निवेश के प्रति जागरूकता लाने के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

इस अवसर पर ब्रांच का सहयोगी स्टाफ उपस्थित रहा। उपस्थित जनों ने ब्रांच की सफलता के लिए शुभकामनाएं भेंट की।

मुख्यमंत्री साय नवनियुक्त अध्यक्षों के पदभार ग्रहण समारोह में हुए शामिल

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज रायपुर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री नीलू शर्मा एवं छत्तीसगढ़ साहित्य अकादमी के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री शशांक शर्मा के पदभार ग्रहण और अभिनंदन समारोह में शामिल हुए। छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की। मुख्यमंत्री श्री साय ने राजकीय गमछा, पुष्प गुच्छ और स्मृति चिन्ह भेंटकर दोनों अध्यक्षों का अभिनंदन किया। विशिष्ट अतिथियों और गणमान्य नागरिकों से भरे खचाखच ऑडिटोरियम में पदभार ग्रहण करने के बाद दोनों नवनियुक्त अध्यक्षों को सभी लोगों ने बधाई और शुभकामनाएं दीं। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव, कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम, वन मंत्री श्री केदार कश्यप तथा खाद्य मंत्री श्री दयालदास बघेल भी समारोह में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने पदभार ग्रहण और अभिनंदन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में सरगुजा से लेकर बस्तर तक पर्यटन की अपार संभावना है। राज्य में डबल इंजन की सरकार के प्रभावी कदमों से बस्तर में नक्सलवाद अपनी आखिरी सांसें गिन रहा है।

रायपुर ईडी कार्यालय के बाहर भूपेश बघेल समेत कई कांग्रेसियों ने किया प्रदर्शन

रायपुर (विसं)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने नेशनल हेराल्ड केस में विशेष अदालत में चार्जशीट दाखिल की है, जिसमें सोनिया गांधी, राहुल गांधी, सुमन दुबे और कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा का नाम शामिल है. इसके विरोध में राजधानी रायपुर के राजिव गांधी चौक स्थित ईडी दफ्तर के बाहर बड़ी संख्या में कांग्रेसी प्रदर्शन करने पहुंचे. मौके पर पूर्व सीएम बघेल, पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव समेत कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे.

भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने 2012 में दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट में एक याचिका दाखिल करते हुए सोनिया गांधी, राहुल गांधी और कांग्रेस के ही मोतीलाल वोरा, ऑस्कर फर्नांडीज, सैम पित्रोदा और सुमन दुबे पर घाटे में चल रहे नेशनल हेराल्ड अखबार को धोखाधड़ी और पैसों की हेराफेरी के जरिए हड़पने का आरोप लगाया था. आरोप के मुताबिक, कांग्रेसी नेताओं ने नेशनल हेराल्ड की संपत्तियों पर कब्जे के लिए यंग इंडियन लिमिटेड ऑर्गेनाइजेशन बनाया और उसके जरिए नेशनल हेराल्ड का प्रकाशन करने वाली एसोसिएटेड जर्नल लिमिटेड (छुरु) का अवैध अधिग्रहण कर लिया. स्वामी का आरोप था कि ऐसा दिल्ली के बहादुर शाह जफर मार्ग स्थित हेराल्ड हाउस की 2000 करोड़ रुपए की बिल्डिंग पर कब्जा करने के लिए किया गया था.

सुब्रमण्यम स्वामी ने 2000 करोड़ रुपए की कंपनी को केवल 50 लाख रुपए में खरीदे जाने को लेकर सोनिया गांधी, राहुल गांधी समेत केस से जुड़े कांग्रेस के अन्य वरिष्ठ नेताओं के खिलाफ आपराधिक मुकदमा चलाने की मांग की थी. जून 2014 ने कोर्ट ने सोनिया, राहुल समेत अन्य आरोपियों के खिलाफ समन जारी किया. अगस्त 2014 में श्वष्ठ ने इस मामले में एक्शन लेते हुए मनी लॉन्ड्रिंग का केस दर्ज किया. दिसंबर 2015 में दिल्ली के पटियाला कोर्ट ने सोनिया, राहुल समेत सभी आरोपियों को जमानत दे दी.

बेहतर भारत एवं एनजीओ 'माँ' द्वारा भव्य नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच एवं रक्तदान शिविर का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर स्थित गुरुद्वारा धन धन बाबा बुद्धा साहिब जी, तेलीबांधा में आज दिनांक 14 अप्रैल को बेहतर भारत एवं हृतह 'माँ' के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच एवं रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया।

Better Bharat एक प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संस्था है जो स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में कार्य कर रही है। यह संस्था कैंसर, हृदय रोग, न्यूरोलॉजी जैसी गंभीर बीमारियों के इलाज, मरीजों की काउंसलिंग, जागरूकता और सहायता कार्यों में देशभर के 50 से अधिक अस्पतालों के साथ मिलकर कार्य कर रही है। बेहतर भारत का उद्देश्य भारत के छोटे शहरों और दूरदराज़ के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुँचाना है।

एनजीओ 'माँ' एक समर्पित संस्था है जो मुख्यत: सड़क पर रहने वाले बेसहारा जानवरों के कल्याण तथा उनके लिए चिकित्सा सुविधा एवं अंतिम संस्कार जैसी सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु कार्य कर रही है। इस शिविर में रायपुर के कई प्रमुख अस्पतालों की विशेषज्ञ टीमों ने सेवाएं दीं। ममता हॉस्पिटल- डॉ. कनक रमनानी एवं टीम। मित्तल हॉस्पिटल- डॉ. सुमन मित्तल एवं टीम। छत्तीसगढ़ आई हॉस्पिटल- डॉ. मनीष श्रीवास्तव एवं टीम। हेरिटेज हॉस्पिटल। एमजीएम आई हॉस्पिटल। सीता डेंटल हॉस्पिटल- डॉ. जितेन्द्र सर्राफ एवं टीम। Parth Dental Clinic- डॉ. कार्तिकेय देवांगन एवं टीम। डॉ. सुमी अग्रवाल (स्त्री रोग विशेषज्ञ) एवं उनकी टीम। गुरुद्वारा समिति द्वारा संचालित दवाइयों का लंगर पहल के तहत ज़रूरतमंद मरीजों को नि:शुल्क दवाइयाँ भी वितरित की गईं। शिविर में प्राप्त आँकड़े- कुल 224 मरीजों ने स्वास्थ्य परामर्श प्राप्त किया। 93 यूनिट रक्तदान सफलतापूर्वक हुआ।

बेहतर भारत एवं एनजीओ 'माँ' इस सामाजिक सेवा को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी डॉक्टर्स, अस्पतालों, गुरुद्वारा समिति एवं स्वयंसेवकों का हार्दिक धन्यवाद करता है। बेहतर भारतभविष्य में भी ऐसे जनहितकारी आयोजन निरंतर करता रहेगा ताकि हर व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुँच सकें।

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल के अध्यक्ष अनुराग सिंह देव ने मण्डल की आवासीय गतिविधियों एवं योजनाओं के संबंध में ली समीक्षा बैठक

रायपुर (विश्व परिवार)। अनुराग सिंह देव, माननीय अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल ने दिनांक 15 अप्रैल 2025 को आयुक्त एवं मण्डल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मण्डल की आवासीय गतिविधियों, योजनाओं एवं निर्माण कार्यों की समीक्षा की।

आयुक्त कुन्दन कुमार ने हाऊसिंग बोर्ड के गठन, सेट-अप, मण्डल का उद्देश्य के साथ-साथ विभिन्न शाखाओं के संचालन एवं उनके दायित्व/कार्यों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही उन्होंने मण्डल की वर्तमान में चल रही योजनाओं रिडेव्हलपमेंट योजना, अटल विहार योजना, सामान्य आवास योजना एवं अन्य योजनाओं की जानकारी दी। साथ ही कार्य संपादन हेतु मण्डल में निहित प्रक्रियाओं की जानकारी भी दी।

अध्यक्ष श्री अनुराग सिंह देव ने उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि मण्डल की वेबसाईट में रिक्त भवनों की जानकारी में भवनों का प्रकार प्रदर्शित होता है किन्तु उसमें कितने रूम, हॉल और किचन स्पष्ट नहीं होता, अत: भवनों के वर्ग के साथ कितने रूम, हाल और किचन है यह स्पष्ट किया जाए। उन्होंने मण्डल में होने वाले व्यय का मूल्यांकन किए जाने, कार्यो के सुचारू संचालन एवं निर्णय हेतु आवश्यक समितियॉ जिसमें न्यायालयीन प्रकरणों के निराकरण, रिक्त संपत्तियों के विक्रय, रिडेव्हलपमेंट कार्यो एवं जमीन अधिग्रहण हेतु समिति गठित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने मण्डल के निर्माण व विकास कार्यो में गुणवत्ता व समय-सीमा का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। उन्होंने यह भी कहा कि, सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को पूर्ण समर्पण के साथ कड़ी मेहनत करनी होगी, जिससे 6 माह के अंदर ही हम मण्डल की आवासीय गतिविधियों को समुचित गति दे सकें।

माननीय अध्यक्ष, अनुराग सिंह देव ने शासन के विभिन्न विभागों के निर्माण कार्य, निक्षेप कार्य के रूप में प्राप्त करने हेतु समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को लगातार प्रयास करने हेतु निर्देशित किया।

बैठक में अपर आयुक्त, मुख्यालय हर्ष कुमार जोशी, अपर आयुक्त अजीत सिंह पटेल, सुनील कुमार भगत, राजेन्द्र कुमार राठौर, हेमंत कुमार वर्मा, प्रशासकीय अधिकारी श्री पुलक भट्टाचार्य, मुख्य लेखा अधिकारी श्री पी.के.सोनवानी, मुख्य संपदा अधिकारी सुनील कुमार सिंह, उपायुक्त बी.बी.सिंह, पूनम अग्रवाल, श्री जी.पी. प्रजापति, ई.वाई. कंसलटेंट टीम एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

वक्फ संपत्ति की फर्जी रजिस्ट्री का खुलासा

रायपुर (आरएनएस)। नए वक्फ विधेयक 2025 के तहत केंद्र सरकार छत्तीसगढ़ समेत देशभर में वक्फ संपत्तियों का सर्वे करा रही है। इन सभी के बीच छत्तीसगढ़ में 500 करोड़ से ऊपर की वक्फकी संपत्ति की फर्जी रजिस्ट्री का खुलासा हुआ है। वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने जानकारी दी है। सलीम राज ने बताया कि अभी पंजीकृत 500 करोड़ की संपत्ति पर ही दावा किया है। गैर पंजीकृत संपत्ति जो वक्फ बोर्ड की है, उसका चिह्नांकन किया जा रहा है। आगे आने वाले दिनों में इन संपत्तियों को वक्फबोर्ड के अंडर में लेने के लिए इसी प्रक्रिया को दोहराया जाएगा। सलीम राज ने बताया कि वक्फकी संपत्ति को खाली कराने के लिए नोटिस जारी किया है, ताकि संपत्तियों को वक्फबोर्ड के कब्जे में किया जा सके।

कलिंगा विश्वविद्यालय (केयू) और पर्यावरण एवं ऊर्जा विकास केंद्र (CEED) के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर

रायपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 16 अप्रैल 2025 को कलिंगा विश्वविद्यालय और पर्यावरण एवं ऊर्जा विकास केंद्र (CEED) ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। कलिंगा विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित हस्ताक्षर समारोह में जलवायु और ऊर्जा परिवर्तन, अनुसंधान और नवाचार, संसाधन साझाकरण, क्षमता निर्माण, शिक्षाविदों और औद्योगिक सहयोग के बीच नवीन सहयोग आदि क्षेत्रों पर ध्यान आकर्षित किया गया। इस साझेदारी का उद्देश्य विविध पहलों के माध्यम से छात्रों को सशक्त बनाना तथा उनके समग्र विकास और आधुनिक चुनौतियों के लिए तैयारी में योगदान देना है।

पर्यावरण एवं ऊर्जा विकास केंद्र (CEED) मुख्य रूप से ऊर्जा परिवर्तन, परिवेशी वायु गुणवत्ता, वृत्तीय अर्थव्यवस्था और सभी के लिए स्वच्छ जल पर ध्यान केंद्रित करते हुए जलवायु परिवर्तन की दिशा में काम करता है। पिछले 10 वर्षों से ष्टश्वश्वष्ठ दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड में कार्य करते हुए सिंधु-गंगा के मैदान में जलवायु परिवर्तन, कार्बन तटस्थता, परिवेशी वायु गुणवत्ता, ऊर्जा संक्रमण और चक्रीय अर्थव्यवस्था के मुद्दों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है।

समझौता ज्ञापन पर ष्टश्वश्वष्ठ के सीईओ और संस्थापक श्री रमापति कुमार और कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. संदीप गांधी ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर. श्रीधर, महानिदेशक डॉ. बायजू जॉन तथा सभी डीन और विभागाध्यक्ष भी उपस्थित थे। CEED टीम के प्रतिनिधियों में डॉ. मनीष वर्मा- निदेशक, जलवायु एवं ऊर्जा, श्री अश्विनी अशोक- निदेशक, जस्ट ट्रांजिशन, श्री तुषार शर्मा- राज्य प्रमुख, छत्तीसगढ़, सुश्री नूतन वर्मा- कार्यक्रम अधिकारी, आउटरीच और श्री केशव शर्मा- एसोसिएट, आउटरीच शामिल थे।

कलिंगा विश्वविद्यालय मध्य भारत का एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान है। नवाचार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए, विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा ग्रेड क्क से मान्यता प्राप्त है। यह छत्तीसगढ़ का एकमात्र निजी विश्वविद्यालय है, जो लगातार तीसरे वर्ष 2022, 2023 और 2024 के लिए शीर्ष 101-150 विश्वविद्यालयों के बैंड में एनआईआरएफ रैंकिंग में शामिल है।

छत्तीसगढ़ में स्काउटिंग को मिलेगी नई दिशा और ऊर्जा : सांसद बृजमोहन अग्रवाल

राष्ट्रीय जंबूरी, युवाओं के प्रशिक्षण, संगठन के सुदृढ़ीकरण एवं सामाजिक सेवा के नए आयामों पर हुआ मंथन

सांसद बृजमोहन की अध्यक्षता में भारत स्काउट्स एवं गाइड्स छत्तीसगढ़ राज्य कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स छत्तीसगढ़ की राज्य कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन आज रायपुर के न्यू सर्किट हाउस में सम्पन्न हुआ। राज्य कार्यकारिणी के अध्यक्ष एवं रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल बैठक के मुख्य अतिथि और डॉ. सोमनाथ यादव की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई।

बैठक में प्रदेश के सभी जिलों से आए प्रतिनिधियों से स्काउटिंग गतिविधियों की जानकारी ली गई और संगठन की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की दिशा पर विस्तार से चर्चा की गई। सांसद श्री अग्रवाल ने कहा कि स्काउटिंग युवाओं में सेवा, अनुशासन, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव विकसित करने का सशक्त माध्यम है।

राज्य मुख्य आयुक्त डॉ. सोमनाथ यादव ने बीते वर्ष की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की और 'एक पेड़ माँ के नाम' जैसे नवाचारों की सफलता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि प्रदेश के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्काउटिंग गतिविधियों की शुरुआत हो चुकी है, जिससे युवा वर्ग सशक्त हो रहा है।

सांसद श्री अग्रवाल ने विशेष रूप से निर्देश दिया कि गर्मी के मौसम में पानी की समस्या को देखते हुए भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की टीम गांव-गांव जाकर लोगों की मदद करें और जहां आवश्यक हो वहां प्रशासन से समन्वय कर कार्य करें। उन्होंने पानी जनित बीमारियों की रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान चलाने और प्राथमिक चिकित्सा शिविर आयोजित करने के भी निर्देश दिए। वर्तमान में स्काउट्स एवं गाइड्स द्वारा प्रदेशभर में 300 से ज्यादा स्थानों पर पेयजल कैंप आयोजित किए जा रहे हैं। बैठक में संगठन के वित्तीय प्रबंधन और आगामी बजट पर भी चर्चा हुई। सांसद श्री अग्रवाल ने स्काउट्स एवं गाइड्स के लिए किट और ड्रेस के वितरण हेतु ठोस योजना बनाकर चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वयन करने का निर्देश दिया। सांसद श्री अग्रवाल ने बस्तर, सुकमा और दंतेवाड़ा जैसे संवेदनशील जिलों में स्काउटिंग गतिविधियों को मजबूत करने के लिए विशेष प्रयास करने के निर्देश दिए।

मुंह का ना खुलना
पान, तंबाकू सेवन के कारण मुंह का ना खुलना एक्सीडेंट में चोट या अन्य कारणों से मुंह का ना खुलना

कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay 9827144371

ITR फाइल 500/-
Whatsapp पर बनवाऐं
Income Tax फाइल, GST रजिस्ट्रेशन, TDS रिफंड, प्रोजेक्ट रिपोर्ट
CMA DATA, MSME, BALANCE SHEET, फूड लाइसेंस
हमारे Tax Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
www.onlytds.com
सम्पर्क - शेखर गुप्ता 9300755544 - 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354